Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

October 2009



મહેસાણામાં પ.પૂ.મહારાજશ્રીનો ૩૭મો પ્રાકટ્યોત્સવ

પ્રકાશકઃ-
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧

Publisher:-
Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1

॥ आशीर्वाद पत्रम् ॥





દીપાવલી અને નૂતનવર્ષ દરવર્ષે નવો ઉમંગ, ઉત્સાહ અને ઉલ્લાસ લઈ આવે છે. મહા જે સર્વાવતારી સર્વોપરિ શ્રીહરિનો દાસ છે તેના માટે તો આ પર્વ શ્રીહરિનું ભજન-સ્મરણ અને આરાધના માટેનો નવો ઉમળકો અને જોશ ફરનાર છે.

આપણો સૌ તો શ્રી હરિના દાસાનુદાસ છીએ - આપણે સૌ કળીએ શ્રીહરિએ સર્વપ્રથમ અને સ્વયં મહિશક્તિ (ઐશ્વર્ય સ્વરૂપ) એવા શ્રી નરનારાયણ દેવને પ્રાર્થના કરીએ + નૂતન વર્ષ સૌકાર પરમ મંગળ કારી કીર્તિ અને શ્રીહરિના ગમતામાં વર્તન કરીને આપણા જીવનો યથે વીંટળાયેલ આ મનુષ્ય જન્મને ઉત્તમ જન્મ કરી સર્વાવતારી શ્રીહરિના પરમ કૃપાપાત્ર બનીએ.

દેશવિદેશ વસતા સૌ સત્સંગીજીવોને અમારા કુટુંબ શુભાશીર્વાદ સહ નૂતનવર્ષાભિનંદન અને જયશ્રી સ્વામિનારાયણ.

શુભાશીર્વાદ સહ

Shree Swaminarayan Bagh Ahmedabad 380 052 Phone : (079) 27478070 Fax : (079) 27452145 Museum: (079) 2741 9597, 2749 9597



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 अंक : 30 अक्टूम्बर-2009

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कुमकुम रुपरेखा	३
३.	प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३७ वाँ प्रागट्योत्सव महेसाणा में संपन्न	४
४	श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से	५
५	उपासना	६
६	श्रद्धा से सर्वस्व	८
७	सनातन धर्म मार्तण्ड आचार्य १००८ श्री पूज्यपाद देवेन्द्रप्रसादजी महाराज	९
८	सत्संग बालवाटिका	११
९	भक्ति सुधा	१३
१०	प्रश्न पेटी	१७
११	सत्संग समाचार	१८

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५१७ - ९८२५३०१५१७
फोक्स : २७४१९५१७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम

दीपावली अर्थात् प्रकाश का पर्व । अंधकार से प्रकाश की तरफ, अज्ञान से ज्ञान की तरफ तथा माया से मुक्ति की तरफ लेजाने वाला पर्व । हजारों वर्षो से सनातन संस्कृति के लाखों हिन्दू इस पर्व को आनंद तथा उल्लास के साथ मनाते आये हैं । भगवान श्री स्वामिनारायण ने भी अपनी उपस्थिति में दीपावली का पर्व बड़े उल्लास के साथ मनाते थे । आज भी उसी रुप में मनाया जाता है । धनतेरस, काली चतुदर्शी, दीपावली, नूतन वर्ष, भातृद्वितीया से लाभ पंचमी तक का सभी भारतीय पर्व परंपरा के अनुसार हम सभी उल्लास के साथ मनायें ।

दीपावली के दिन घर के चौखट पर जब हम दीपक जलायें तब प्रभु से यह प्रार्थना करें कि हे प्रभु प्रज्ज्वलित दीपकों का प्रकाश हमारे अन्तःकरण में विद्यमान अज्ञान तथा माया रुपी अंधकार दूरकरके प्रभु के प्रीति का प्रकाश हृदय में फैल जाय ऐसी प्रार्थना अवश्य करें . प्रभु रामचन्द्र ने रावण का बधकिया था, यह एक रुपक है । लेकिन अपने अन्तःकरण में हजारों रावण विद्यमान है । उसी का बधकरके प्रभु रुपी अयोध्या में हमारा पुनरागमन ही दीपावली है । दीपावली के बाद आनेवाला नूतन वर्ष हम सभी के लिये सुख, समृद्धि तथा शांति के साथ आरोग्य प्रदान करे तथा अपने इष्टदेव महाप्रभु भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणों में उत्तरोत्तर निष्ठा बढती रहे । नूतन वर्ष के अवसर पर अपने घर के वर्तन तो सभी लोग साफ करते ही हैं लेकिन इसके साथ ही अपने अंतःकरण में नासमझी रुपी या अज्ञान रुपी कल्मष दूर हो, उस में प्रकाश फैले ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना । प्रभु आप सभी भक्तों का सपरिवार श्रेय करें ऐसी शुभेच्छा के साथ, हरि स्मरण के साथ दीपावली की शुभ कामना तथा नूतन वर्षाभिनन्दन ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२००९)



६. श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

८. श्री मुकेशभाई अंबालाल पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप।

३. श्री धर्मप्रसादभाई एम. शुक्ल के यहाँ पदार्पण ड्राईव ईन रोड।

१२-१३. छयैपाधाम दर्शनार्थ पदार्पण.

१५. श्री चंद्रसिंह उदेसिंह चौहाण के यहाँ पदार्पण, जीवराजपार्क।

१७. जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर दर्शनार्थ पदार्पण।
श्री वाडीलालभाई पटेल (गायत्री दुग्धालय) द्वारा आयोजित पी.पी. स्वामी के रात्रि पारायण प्रसंग पर पदार्पण, नाराणपुरा।

१९. मांडल गाँव में श्री जितेन्द्रभाई रामजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण।

२०. श्रीजी प्रोवीझन स्टोर में पदार्पण, सरखेज, वहेलाल श्री स्वामिनारायण मंदिर में यज्ञ तथा मंदिर के जीर्णोद्धार प्रसंग पर पदार्पण।

२१. वणझर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण।

२८. महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ३७ वें प्रागट्योत्सव को प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में संत तथा हरिभक्त धूमधाम से सम्पन्न किये। सायंकाल आस्ट्रेलिया के धर्मप्रवास पर ता. २८-९-०९ से ता. १२-१०-०९ तक।

श्रीजी महाराज के आज्ञानुसार दशांस-विशांस धमार्थ दान करने के लिये हरिभक्तों को सूचना

प्रिय भक्तजन ! महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का नूतन वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण। अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवाने सभी को खूब सुखी किया है। कारण यह कि जो हरिभक्त श्रीहरि की शिक्षापत्री का अक्षरश: पालन करके जीवन निर्वाह किये हैं, उनके जीवन में कभी कोई कमी नहीं आती है। शि.प. के १४७ वें श्लोक में श्रीजी महाराज ने स्पष्ट आज्ञा की है हमारे प्रत्येक आश्रित कमाई का दशवां भाग या वीसवां भाग अवश्यदान करें। देश विभाग के अनुसार जिस देश में रहते हों उसके मुख्य मंदिर में दान करके नाम की पक्की रसीद प्राप्त करलें। दान की भेंट मात्र मंदिर में ही करनी चाहिये अन्यत्र निर्माणकार्य में, जिर्णोद्धार या किसी भी सेवा में दान नहीं देना चाहिये। इसलिये श्री नरनारायणदेव देश के हरिभक्त अहमदाबाद मुख्य मंदिर में कोठार की आफिस में दशांस-विशांस दान करके पक्की पहुँच (धर्मादा) अवश्य प्राप्त करले।

जो हरिभक्त अज्ञातवश दान-भेंट करना भूल गये हों या अन्यत्र सेवा में अपने दशांस-विशांस भाग को दान में न समझे, वह महाराज की आज्ञा के विरुद्ध है अत: श्रीहरि की आज्ञा का ध्यान करके शुद्ध धर्मार्थ किया गया दान भेट (धर्मादा) व्यवहारार्थ शुद्ध समझा जायेगा।

"जागे तब से सबेरा" इस पंक्ति को यथार्थ घरके सभी छोटे-बड़े व्यापारी उद्योग वाले नूतन वर्ष को शुद्ध दान-भेंट का नियम लेकर अपने जीवन को सुखी बनावें।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३७ वाँ प्रागट्योत्सव महेसाणा में संपन्न

एहवाल संकलन : कमलेश एन. पटेल (अहमदाबाद)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा संस्थापित श्री नरनारायणदेव की गादी के आचार्य परंपरा का प्रागट्योत्सव अहमदाबाद में मनाया जाता था। इस उत्सव को मनाने के लिये श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सर्व प्रथम उत्तर गुजरात का केन्द्र स्थान महेसाणा में मनाने की संमति प्रदान करदी।

दंढाव्य देश गादी स्थान पर अनन्य श्रद्धा रखता है इसलिये बड़े उत्साह के साथ धूमधाम के साथ मनाने की तैयारी होने लगी। महेसाणा मंदिर के नेतृत्व में पूरे दंढाव्य प्रदेश के छोटे-बड़े मंदिरों के कोठारी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के संचालक सभी एक साथ मिलकर गाव-गाँव घूमकर महोत्सव को संपन्न करने की तैयारी में लग गये।

बालवा, वडु, माणेकपुर-मोटप, ऊँझा, करसनपुरा, मरतोली इत्यादि गाँवो के हरिभक्त पैदल चलकर इस उत्सव में भाग लेने के लिये प्रस्थान कर दिये। हजारो की संख्या में लोग आकर नव निर्मित मंदिर के दर्शनार्थ पहुँच आये।

ता. २८-९-०९ आश्विन शुक्ल-१० दशहरा के दिन प्रातः काल अहमदाबाद श्री नरनारायदेव की मंगला आरती उतारकर तथा दर्शन करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी, पू. श्रीराजा इस तरह सम्पूर्ण धर्मकुल का आगमन हुआ था। संत वृद्ध तथा सां.यो. बहनों से मंदिर भर गया था। मंगल वाद्ययंत्र से सारा वातावरण पवित्र हो गया था।

प्रातः ७-०० बजे भगवान का महाभिषेक प्रारंभ हुआ। देश-विदेश में लाईव दर्शन इन्टरनेट द्वारा महेसाणा मंदिर द्वारा प्रदर्शित किया गया, जिससे घर बैठे भक्तों को दर्शन का लाभ मिल सके।

मंदिर के विशाल प्रांगण में विशाल सुशोभित सभा मंडप में छोटे से बड़े सभी यथायोग्य स्थान प्राप्त करके बैठने लगे।

प्रागट्योत्सव का प्रारंभ होते ही संगीतमय वातावरण के साथ हैपी बर्थ डे टूयू के गीत के साथ दिव्य बन गया था। सभी की दृष्टि प.पू. आचार्य महाराजश्री के मंद हास्य युक्त मुखाकृति की तरफ थी।

आयोजकों की व्यवस्था मात्र इष्टदेव तथा आचार्य महाराजश्री को प्रसन्न करने के लिये थी।

जेतलपुर मंदिर के महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी के नेतृत्व में संत मंडल आयोजन को सफल बनाने में रात दिन लगे रहे। महेसाणा शहर के युवक, अग्रगण्य हरिभक्त दंढाव्य देश के हरिभक्तों के मन में एक ही भाव था कि आने वाले सभी को इस कार्य के प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ मिले।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा अन्य मंदिरों के संत महंत पधारे हुये थे। महेसाणा मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव २० फरवरी-०९ के बाद मंदिर के महंत स्वामी की पैनी दृष्टि तथा हरिभक्तों के उदार भाव के कारण मंदिर के बगल की ७००० चो.फूट नूतन भूमि को खरीद कर ५५ लाख रुपये के दस्तावेज को वहाँ के अग्रगण्य हरिभक्तों ने प.पू. महाराजश्री को समर्पण किया।

मात्र यजमान ही पू. आचार्य महाराजश्री के आरती का लाभ लेते हैं, इस बार तो २५ हजार दीपक जलाकर समूह में सभी ने आरती का लाभ लिया। संत, सां.यो. बहने तथा हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर इस कार्य को सफल बनाने में सहयोगी हुये। आगामी जन्मोत्सव इडर मंदिर में मनाया जायेगा। (पेईन्टर प्रवीणभाई पटेल महेसाणा, पेईन्टर भरतभाई भावसार, महेसाणा)

श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से

- गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)



इस पृथ्वी पर सर्वावतारी श्रीहरि जिस प्रकार सभाओं में हरिभक्तों को उपदेशात्मक आशीर्वचन का सुख देते थे उसी तरह उन्हीं के स्थान पर उन्हीं के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वैसा ही सुख देरहें हैं। ता. ११-५-०९ को कर्म शक्तिपार्क में दशाब्दी महोत्सव तथा बहनों के नूतन मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पू. महाराजश्री द्वारा प्रदत्त आशीर्वचन लिख रहा हूँ।

मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रतिदिन पूजन-अर्चन तथा घर में सत्संग का वातावरण बनाना महिलाओं के हाथ में है। घर में एक महिला भी सत्संगी होतो पूरा परिवार सत्संगी होजाता है। पुरुष व्यवहार कार्य में दुकान में या आफिस में हो उनके पास समय कम रहता हैं - लेकिन महिलाओं के पास समय खूब रहता है इसलिये अगल-बगल का भी वे वातावरण सत्संगमय बना सकती हैं। हम ऐसे भी गांव देखे हैं जहाँ एक घर भी सत्संगी का नहीं होता है लेकिन उस गाँव में विवाहित एक लड़की चली जाय तो वह घर ही नहीं बल्कि अगल-बगल का घर भी सत्संगी हो जाता है। परिणाम स्वरुप धीरे धीरे उस गाँव में महाराज का मंदिर बन जाता है।

भगवान में मन होतो हृदय में दूसरा दोष नहीं आता है। जिसने भगवान को छोड़ा उसमें अनेकों दोष आजाता हैं। अपने में कोई दोष होतो उसके सामने हथियार लेकर लड़ा नहीं जा सकता। क्रोधहो या मान हो उसके सामने तलवार लेकर कहें कि तूं चला जा तो क्या वह चला जायेगा ? इसके लिये एक मात्र साधनहैं मंदिर में महाराज के सामने आंख बंद करके अपने हृदय में झांकिये कि मेरे में क्या दोष है फिर महाराज को प्रार्थना करिये, नित्य सत्संग करिये तब वह दोष धीरे-धीरे निर्मूल होता जायेगा। अपने दोष की जानकारी स्वयं को होनी चाहिये।

दूसरे के दोष को न देखकर सभी में गुण देखें। भक्त अर्थात् मात्र हरिभक्त नहीं, संत, पार्षद, ब्रह्मचारी, हम, आप सभी महाराज के ही हैं। यदि हम सभी में गुण ही देखने लगें तो हमारा अन्तःकरण शुद्ध-निर्मल हो जायेगा। सद्गुणों से भर जायेगा। दोष देखने पर विरुद्ध परिणाम आयेगा। फिर सत्संग का सुख नहीं मिलेगा। वचनामृत में महाराज ने ऐसे लोगों को आधा विमुख कहा है। आज श्रीजी महाराज होते तो लोग उनमें भी अवगुण

(अनुसंधान नं. ७ पर)

उपासना

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी, जमीयतपुरा
(महंत स्वामी माणसा)

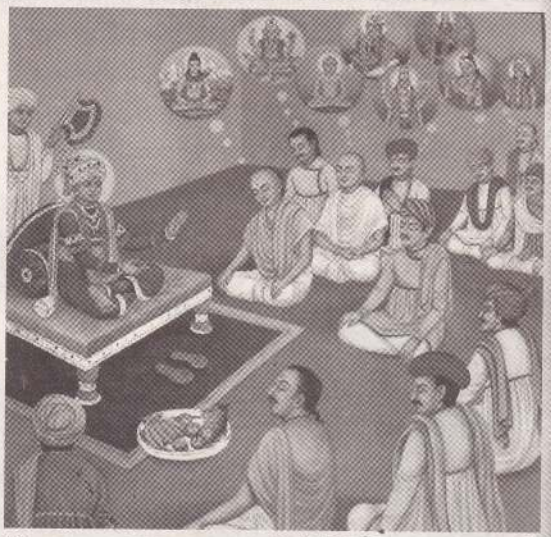
संवत् १८९८ श्रावण पूर्णिमा के दिन सभा में सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की उपस्थिति में बातावरण आनंदमय बन गया था। दादा खाचर स्वयं आनंदित होकर महाराज को राखी बांधने की तैयारी में हैं। इसी तरह वहाँ अनेकों हरिभक्त उपस्थित हैं। संत भी अनेको प्रकार पुष्पों से सजाकर वातावरण को सुगंधमय बना दिये हैं। उसी समय महाराज के पूजन हेतु प्रथम स.गु. आनंदानंद स्वामी आते हैं। मस्तक पर कुंकुम लेपन करते हैं, चावल लगाते हैं। रक्षाबांधते हैं। बाद में क्रमशः भक्तजन भी अपने आनंद की सीमा पार करते हुये प्रभु के पूजन में लग जाते हैं। स.गु. मुक्तानंद स्वामी सितार लेकर हरिगुण गाने में तल्लीन हो जाते हैं। महाराज कहते हैं कि स्वामी इसे रहने दीजिये, आज हम परमेश्वर से सम्बन्धित कुछ चर्चा करते हैं।

महाराज ने कहा कि 'ज्ञानमार्ग को इस तरह समझना चाहिये कि भगवान के स्वरुप में किसी प्रकार द्रोह न हो, लेकिन कदाचित वचन द्रोह हो जाय तो स्वरुप द्रोह नहीं होना चाहिये।' भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद् गीता में चार प्रकार के भक्तों का उल्लेख किया है।

'चतुर्विधा भजन्ते माँ जनाः सुकृतोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥'

आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, तथा ज्ञानी इन चारो में से ज्ञानी को श्रेष्ठ कहा है। ज्ञानी को अपनी आत्मा कहे हैं। इसलिये हे भक्तों ! आप सभी ज्ञान अवश्य प्राप्त करना। भगवान के स्वरुप में दृढता आवे उससे पहले भगवान तथा भगवान के स्वरुप को समझना आवश्यक है।

भगवान अन्वय व्यतिरेक से अक्षरधाम के दिव्य



सिंहासन पर विराजमान रहते हैं वेही दिव्य साकर मूर्ति एक तथा अद्वितीय ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम अक्षरातीत नारायण जो संवत् १८३७ में छपैया गाँव में धर्म-भक्ति के घर जीवमात्र का कल्याण करने के लिये माया से निर्लिप्त, निस्पृह, सुखमय मूर्ति, सर्वकर्ता श्रीहरि का व्यतिरेक स्वरुप है। इन्हीं प्रभु का जिनमें जितना प्रवेश हुआ, जितने अंश से हुआ वही भगवान का अवतार कहलाया। कोई मर्यादावतार, कोई कलावतार, कोई पूर्णावतार, लेकिन सभी अवतारों में पूर्णावतार श्रीहरि का ही था। अवतारों का दर्शन पूजन शास्त्र संमत तथा हमारी आज्ञा के अनुसार ही है। पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीहरि का ही दृढता के साथ गुणगान करना सर्वोत्तम भाव है।

आगे श्रीहरि कहते हैं कि जिसमें प्रवेश करता हूँ उसमें अखंडरुप से रहता हूं। यही भगवान का अन्वय रुप है। यह भगवान की आठ प्रकार की मूर्ति शास्त्रो में वर्णित है जिसमें - चित्र प्रतिमा, काष्ठ प्रतिमा, पाषाणप्रतिमा, धातुप्रतिमा, रेती प्रतिमा, माटी प्रतिमा, मनोमय प्रतिमा, मणीमय प्रतिमा। एकांतिक ब्रह्मनिष्ठ संत में भी भगवान अखंड निवास करते हैं। ग.प्र. ८२ वें वचनामृत में स्पष्ट कहे हैं। भगवान का अन्वय या व्यतिरेक किसी भी स्वरुप का द्रोह न हो जाय इसके लिये महाराज

कहते हैं कि चक्रवर्ती राजा का किसी छोटे राजा के साथ समानता की जाय तो चक्रवर्ती राजा का द्रोह कहा जायेगा इसी तरह अन्य अवतारों की समानता महाराज के साथ करना अपराधकहा जायेगा । दूसरा उदाहरण देते हुये कहते हैं कि सर्वांग सुंदर राजा को नाक-कान बिना का कहना यह भी द्रोह ही कहा जायेगा । इसी तरह भगवान सदा साकार मूर्ति हैं । उन्हें निराकार कहकर द्रोह करने जैसा है । तीसरा दृष्टांत यह है कि जिसकी सत्ता चलती हो उसकी अवगणना करके अन्य को सत्तारुढ मानना सत्तारुढ का द्रोह कहा जायेगा । इसलिये सर्वकर्ता, हर्ता, नियंता भगवान स्वामिनारायण हैं । इसके अलांवा काल, धर्म, माया तथा अन्य में पूजन अर्चन का भाव लाना श्रीहरि का द्रोह ही कहा जायेगा । श्रीहरि ने यह भी बताया कि हमारी बताई गयी मर्यादा में कहीं भूल हो जाय तो हम प्रायश्चित कराकर शुद्धि करादेंगे । लेकिन जो मेरे में निष्ठा का अभाव रखेगा उसे हम कभी माफ नहीं करेंगे । इसलिये भक्तों ! इसका सदा ध्यान रखना कि सर्वोपरि भगवान में निष्ठा का कभी अभाव नहीं आने पावे । जो एक निष्ठा रखते हैं उन्हें भगवान से मांगने की जरुरत नहीं होती, प्रभु स्वयं देते हैं ।

श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से पेज नं. ५ से आगे

(दोष) ही देखते । क्यों कि उनके स्वभाव में अवगुण देखने की आदत होती है । वचनामृत में महाराज ने स्वभाव को दूर करने की खूब बात की है । जो स्वभाव छोड़कर महाराज के अनुकूल होकर वर्तन करते हैं वे महाराज के नजदीक होते हैं । जो स्वभाव नहीं छोड़ते अपनी प्रकृति के अनुसार वर्तन करते हैं वे महाराज से बहुत दूर रहते हैं । दादा खाचर भगवान के पास रह सके लेकिन जीवा खाचर भगवान के नजदीक नहीं आ सके । इसका कारण यह नहीं कि दादा खाचर अपना दरबारगढ उन्हें दे दिये थे । महाराज तो भगवान थे । वे कितने ही सोने के दरबार गढ इस पृथ्वी में से बाहर निकाल सकते थे । परंतु यथार्थ यह है कि दादा खाचर महाराज की इच्छानुसार वर्तन करते थे अपनी प्रकृति को छोड़ दिये थे। वे महाराज की दृष्टि देखते रहते थे । जब कि जीवा खाचर अपने स्वभाव को छोड़ नहीं सके जिससे महाराज से दूर रहे ।

कोई भी मान-संमान-संपत्ति मिले उस समय यदि भगवान एवं सत्संग की दृढता न हो तो उसी में से अंत का जन्म होता हैं । कितने लोग मंदिर में आते हैं तो वे अपनी बुद्धि का अवश्य प्रदर्शन करते हैं और कहते हैं कि यह यहाँ ठीक नहीं है । अरे भाई ! माईकल एन्जोना बहुत बड़ा शिल्पी था । आज भी उसके शिल्प कला पर बड़ी कीमत मिलती है । एक धनवान व्यक्ति उसे शिल्प का काम सौंपा और कहा कि तू अच्छा काम करे तो तुझे इसका अच्छा पुरस्कार देंगे । जिस प्रकार भगवान की मूर्ति का काम हो रहा हो उस समय बहुत सारे संत-हरिभक्त देखने जाते हैं, ठीक इसी तरह वह धनवान व्यक्ति उस शिल्पी का काम देखने गया । वह विचार कर गया था कि कहीं कुछ कमी अवश्य निकालना है । धनके मद में वह शिल्पी के कार्य में थोड़ी कमी बताते हुये कहा कि इस मूर्ति के नाक में थोड़ी कमी है, उस शिल्पी ने रहस्य को समझकर हथौड़ी से थोड़ा इधर उधर किया फिर पूछा अब कैसा है, उसने कहा हाँ अब ठीक हैं । यद्यपि शिल्पीने कुछ किया ही नहीं था ।

श्रद्धा सा सर्वस्व

- शा. अभयप्रकाशदास गुरु महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

शास्त्रों के अनुसार मुक्ति की चाहना वालों के लिये ज्ञान आवश्यक है। 'ऋतेज्ञानान्न मुक्तिः' इसके साथ ही यह श्रद्धावान को ही प्राप्त होता है। 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।'

श्रद्धा हो तो सब कुछ हो सकता है। चाहे जो भी कार्य हो लेकिन कार्य में श्रद्धा होनी आवश्यक है। उसी में सफलता मिलती है जिसमें श्रद्धा हो।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने फणेणी गांव में सभी को धार्मिक उपदेश के बाद धर्म की वृद्धि कैसे हो। इसकी उपाय बताये हैं। शतानंद स्वामीने सत्संगिजीवन के दूसरे प्रकरण में कहा है कि भक्तजनों ! धर्म में वृद्धि करानेवाला श्रेष्ठ साधन श्रद्धा है। श्रद्धा के विना धर्म की प्राप्ति नही होती। शरीर को कितना भी तप करकें या खूब खर्च करने से धर्म की प्राप्ति नहीं होती। इसलिये श्रद्धा आवश्यक है। श्रद्धा माता की तरह है। जिस तरह माता बालक को पोषण करके बड़ा बनाती है। उसी तरह श्रद्धा भी धर्म का पोषण करके वृद्धिमय बना देती है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन सभी की प्राप्ति में मूळ श्रद्धा ही है।

गीता के चोथे अध्याय के ३९ तथा ४० वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रद्धावान व्यक्ति को आध्यात्म की तुरंत प्राप्ति होती है। श्रद्धा रहित व्यक्ति मोक्ष मार्ग से पतित हो जाता है। भगवान श्रीकृष्ण गीता के १७ वें अध्याय के २८ वे श्लोक में कहते हैं कि श्रद्धा के बिना किया गया तप, व्रत, हवन, दान इत्यादि पूर्णतः फलकारक नहीं होते। हरिलीलामृत में भी विहारीलालजी महाराजश्री कहते हैं कि -

श्रद्धा धरे छे, जन चित्तजेह गणाय छे ! उत्तम भक्त एह,श्रद्धा विना पूजन जो कराय, यथार्थ तेनुं फलतो न थाय। श्रद्धा विना नो जप जण्य केवो, करे मजूरो नृप वैढ्य तेवो।

श्रद्धा विनानो उपवास थाय, तो ढोरनी लांधण ते गणाय॥

रामायण में भी श्रद्धा के विषय में शबरी का उल्लेख है। त्रेतायुग में चंपासरोवर के किनारे मतंग ऋषि का आश्रम था। उस आश्रम में मंतग ऋषि की जानकारी के विना रहकर शबरी सेवा करती थी। शबरी को था कि ऋषि के यहाँ भगवान आते रहते हैं। लेकिन स्वयं भीलजाति की थी इसलिये ऋषि के सामने जाने में घबड़ाती थी। परंतु प्रतिदिन जिस मार्ग से ऋषि स्नान करने जाते स्वयं साफ करती। एकवार मतंग ऋषि को हुआ कि रास्ता कौन रोज साफ करता है। किसीने बताया तो अपने पास शबरी को बुलाकर पूछा कि ऐसा रोज क्यों करती हो तब उसने सब बता दिया। मैं भगवान के दर्शन की इच्छा से यह सब करती हूँ। अब वह स्वयं ऋषि की सेवा में लग गयी। मुनि के लिये पूजा का फूल लाती तथा अन्य सेवा का कार्य करती थी। मतंग मुनि के मृत्युकाल आने पर शबरी भी साथ जाने की बात करती है लेकिन मुनि उसे मना करते हैं और कहते हैं कि तू इस आश्रम में रहकर सेवा करना एक दिन भगवान तुम्हें दर्शन देने अवश्य आयेंगे। उसी समय से गुरु के वचन में श्रद्धा रखकर भगवान की राह देखकर बैठ गयी। नित्य मार्ग में पुष्प विछावे, भगवान के लिये फल तोड़कर ले आवे। आज मेरे धाम आयेंगे, आज मेरे राम आयेंगे इस तरह करते करते उसकी वृद्धावस्था आगयी। रामायण में कहा गया है कि भगवान श्रीराम शबरी की श्रद्धा को ध्यान में रखकर ही स्वयं उस आश्रम में आये थे।

भगवान श्री स्वामिनारायण भी श्रद्धा को ही पोषण देते थे। सारंगपुर के १८ वें वचनामृत में कहते हैं कि, जो श्रद्धावान पुरुष हो यदि उसका सच्चे संत के साथ सत्संग हो जाय तो उस संत के वचन से श्रद्धावान उस व्यक्ति में स्वधर्म, वैराग्य, विवेक, ज्ञान, भक्ति इत्यादि गुण प्रगट होते हैं। कामादि विकार नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही गढडा मध्य के चौथे वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि अखंड चितवन के लिये श्रद्धा आवश्यक है। श्रद्धा में ही अखंड प्रभु की मूर्ति स्थिर होती है।

सनातन धर्म मार्तण्ड आचार्य १००८ श्री पूज्यपाद देवेन्द्रप्रसादजी महाराज

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)



इस भारत भूमि की विलक्षणता यह है कि पतित मानव को पावन बना देने वाले महापुरुषों की जनयित्री है। श्रीजी महाराज के सिद्धान्तानुसार दया, स्नेह, भक्ति से युक्त आचार्य को होना चाहिये, इन सभी गुणो से युक्त आचार्य चूडामणि धर्मधुरंधर धर्ममार्तंड श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज का शुभ प्रागट्य संवत् १९७९ आश्विन शुक्ल-१५ (शरद पूर्णिमा) को अहमदाबाद में हुआ था। सं. १९८६ में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। शुभ विवाह १९७९ में काशी विश्वनाथ मंदिर के महंत श्री महावीरप्रसादजी तिवारी की सुपुत्री श्रीमती शारदादेवी के साथ हुआ था। श्री नरनारायणदेव के चौथे गादीपति आचार्य महाराजश्री श्री वासुदेव महाराजश्री के अक्षरवास के बाद सं १९९३ वे में कार्तिक कृष्ण द्वितीया मंगलवार को १५ वर्ष की उम्र में आचार्य पद ग्रहण किये थे। आचार्य पद की शोभा ३२ वर्ष तक बढाये रहे। उनकी व्यवस्थापक समिति के लिये एक सलाहकार समिति की रचना की गयी थी। पूज्य माताजी भी योग्य सलाह देती थी।

पू. महाराजश्री के सलाहकारों में राव बहादुर छोटालाल नाथालाल जोशी, एडवोकेट श्री मूलचंदभाई आशाराम शाह, शेठ श्री वाडीलाल अचरतलाल चोकसी, एडवोकेट मणीलाल, लक्ष्मीदास भालजा, एडवोकेट जमियतराय दया शंकर पंड्या इत्यादि थे। पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराज राजा युधिष्ठिर जैसे अजात शत्रु, पर दुःख दूर करने में रंतिदेव जैसे, गांभीर्य मे सागर की तरह थे। वे समदर्शी, वात्सल्य, स्नेह, औदार्य धैर्य इत्यादि अनेक गुणों से संपन्न थे। वे अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत इत्यादि भाषा में प्रवीण थे। साहित्य, संगीत, कला के निष्णात थे। वे स्वयं कवि थे तथा बहुत सारे काव्य बनाये थे।

संप्रदाय के साहित्य प्रकाशन में उनका अग्र स्थान था। सत्संगिभूषण तथा हरिकृष्ण लीलामृत के संस्कृत ग्रन्थ का गुजराती अनुवाद कराकर प्रकाशित किये थे। उनके आचार्य काल में वचनामृत की २३ हजार प्रति प्रकाशित की गयी थी। भक्त चिंतामणी, निष्कुलानंद काव्य इत्यादि वीस हजार प्रति प्रकाशित की गयी थी। स्वामिनारायण संप्रदाय का इतिहास सचित्र प्रकाशित करवाये थे।

आचार्य देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने संस्कृत का ज्ञान शास्त्री गिरीजा शंकरभाई तथा प्रधान पंडित दुर्गानाथ झाजी से प्राप्त किया था। इसीलिये वे श्लोकों की रचना बड़ी सरलता से कर लेते थे। संप्रदायिक ज्ञान लुडावाडा के श्री गोपालभाई दवे से प्राप्त किये थे। गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा का ज्ञान श्री प्राणलालभाई दवे से प्राप्त किये थे। जब कि संगीत का ज्ञान स्वयं की सिद्धि थी। संगीत के इतने सौखीन थे कि

प्राय: संगीतज्ञों को बुलाकर संगीत समारोह का आयोजन करवाते रहते थे और उन्हें पुरस्कृत भी करते। विविधराग रागिनियों की परख बहुत अच्छी थी। वे सुंदर घोड़सवारी करते थे। कितना भी बिगड़ा घोड़ा हो लगाम पकड़ते ही शांत होजाता था।

माता-पिता के प्रति अटूट श्रद्धा थी। बद्रिनारायण की यात्रा के समय माताजी की पालकी स्वयं उठाकर मातृभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किये थे। अपने पिता के त्रयोदशाह पर हजारो ब्राह्मणों का ब्रह्म भोजन करके तथा संत, हरिभक्त, वैरागियों को भोजन कराकर तृप्त किये थे। सत्संगिभूषण का पारायण करवाये थे। संवत २००९ की रामनवमी को अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के मंदिर से पूर्व भाग में श्री घनश्याम महाराज की प्राणप्रतिष्ठा स्वयं अपने हाथों किये थे। उसी में अक्षरभवन भी तैयार कराने की आज्ञा वे स्वयं दिये थे। यहीं पर आज भी महाराज के प्रसादी का दिव्य संग्रह स्थान जो वंश परंपरा से प्राप्त उसे इसमें संगृहीत किया गया है। जिसमें महाराज के वस्त्र, चरणारविंद, पीतांबर, अन्यान्य वस्त्र, आभूषण, अस्त्रादि, जीवनो पयोगी पात्र भी अक्षर भवन में रख रखाव के साथ संग्रहीत किये गये है।संवत २०१० चैत्र शुक्ल-१० को दोनो लालजी अर्थात् श्री तेजेन्द्रप्रसादजी तथा श्री राघवेन्द्रप्रसादजी का यज्ञोपवीत संस्कार अहमदाबाद मंदिर में बड़े धूमधाम के साथ संपन्न किया गया था। पू. श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज को धर्म मार्तंड की उपाधिकाशी के विद्वानों ने विद्वानो की सभा में दिया था।

शिक्षण के विषय में वे बड़े जागरुक थे। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सहजानंद आटर्स एन्ड कोमर्स कोलेज है। उनके गादी पर पदारुढ का जयंती उत्सव भव्य ढंक से सं. २०१० में मनाया गया था। यह उत्सव सत्संग के अभ्युदय के लिये किया था लेकिन जो भी भेंट आयी वह श्री देवेन्द्र केणवडी ट्रस्ट को दे दिया। वे सरकार को भी आपत्ति के समय सहायता किये थे। चीन का भारत पर जब आक्रमण हुआ था उस समय भी दक्षिण गुजरात रेल राहत संकट में आर्थिक सहयोग करके देश सेवा, जन सेवा का दृष्टांत प्रस्तुत किये थे।

विदेश सत्संग समाचार (पाना २४ नुं चालु)

स्वामिनारयण मंदिर के ११ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य पंचाहन पारायण ता. २८ अगस्त से २ सितम्बर तक शा. स्वा. रामकृष्णदासजीके वक्ता पर संपन्न हुआ।

ता. २-९-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक किया गया था। बाद में कथा की पूर्णाहुति की गयी थी।

प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हुये बताये कि आप सभी हरिभक्त धर्मकुल वंदना महोत्सव में खूब योगदान दिये थे। इसलिये आप सभी को खूब धन्यवाद है। विशेष में कहना यह है कि हरिभक्त व्यक्तिपूजा में ही न रह जांय इसका ध्यान रखना परम आवश्यक है। भगवान का महत्व पहले होना चाहिये। यहाँ के सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि देखकर खूब प्रसन्नता होती है। यहाँ के सभी हरिभक्त, स्वयं सेवक, श्री नरनारायण युवक मंडल, यजमान परिवार, भोजनालय में सेवा करने वाले, सभी को हार्दिक आशीर्वाद। प्रमुख रायसिंहभाई चौधरी पाटोत्सव के यजमान परिवार, श्री जे.के. पटेल, श्री विष्णुभाई पटेल, किरीटभाई गोविंदभाई, विनोदभाई, हर्षदभाई, इत्यादि सभी यजमान परिवार को खूब खूब धन्यवाद। इस प्रसंग पर शा. हरिप्रसाददासजी, जे.पी. स्वामी, पुजारी स्वामी इत्यादि संतो के प्रेरणा से ११ पाटोत्सव बड़े दिव्य ढंग से मनाया गया था।

-वसंत त्रिवेदी

लोस एजलस श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। ता. ९-८-०९ के शुभ दिन प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। बहनो की विशाल सभा में बड़ी गादीवालाजी बहनों को आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी। हरिभक्तों को स्वा. रामानुजदास तथा धर्मकिशोरदासने कथा का लाभ दिया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा श्री गणेश चतुर्थी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

-शा. स्वा. धर्मकिशोरदास

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

एकता में सुख

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

मित्रो ! स्वामिनारायण भगवान का दर्शन तो किये हैं न ? प्रभु के एक हाथ में माला है, दूसरे हाथ से आशीर्वाद देने की भद्रमुद्रा है। प्रभु कहते हैं हमारी तरफ देखों मेरे पांच अंगलुयिों में उपदेश छिपा हुआ है। किस अंगुली में कौन सा उपदेश छिपा हुआ है, उसका निर्देश यहाँ कर रहे हैं -

पांच अगुलियों को छोटी बड़ी बनाने का प्रभु को क्या रहस्य रहा होगा। आज तो कोई भी वस्तु बनाता हैं तो एक समानान्तर की बनाता है। अंगुठा एकदम नाटा एवं मोटा चारो अंगलुयिों से अलग, कनिष्ठिका एक दम पतली एवं छोटी, मध्यमा खूब बड़ी मोटी, इन अंगुलियों का रहस्य यह है कि ये चारो अंगुली एक दिन एकत्रित हुई। ये चारो अंगली अंगूठे की पत्नी है, इनका पति अंगूठा है। इनचारों में से प्रथम तर्जनी अंगुली कहने लगी कि मैं बहुत काम की हूँ। तुम किस काम की हो ? वह बताई कि जो भूला-भटका होता है उसे मैं राह बताती हूँ। कोई अंगूठे के इशारे से नही बताता है। इसलिये हमारी विशेष उपयोगिता है। दूसरी अंगुली मध्यमा ने कहा यह बात सही है कि तू मार्ग बताती है लेकिन मैं तो परलोक का मार्ग बताती हूँ। तुमसे हमारा काम उत्तम है। कोई भी हो वह विष्णु भगवान का भक्त हो, शिव का भक्त हो या माताजी का भक्त हो जब माला फेरता है तो मध्यमा अंगुली पर रखकर फेरता है, इसलिये मेरी तुमसे अधिक उपयोगिता है। तीसरी अनामिका अंगुली ने कहा तुम दोनो हमारी बड़ी बहन हो हम शिकात तो नहीं कर सकती लेकिन मुझ से ही सभी लोग तिलक-चन्दन करते हैं। मुझसे चंदन करके लोग शकुन का अनुभव करते है, मैं सबसे अधिक काम की हूँ। इसके बाद सबसे छोटी कनिष्ठिका ने कहा हम से आप सभी बड़ी हो आप सभी अपनी उपयोगिता बता दीं, अब मेरी उपयोगिता सुनो, मेरा काम आवश्यक जगह पर आता है, जब विद्यालय में कोई बालक लघुशंका जाना चाहता है, उस समय चाहे कितना भी गरम अध्यापक हो जब बालक मुझे (कनिष्ठा का अंगुली) दिखाता है, तुरंत ही बाहर जाने का अवकाश मिल जाता है। इस लिये मुझे लोग शोभारुप मानते हैं। मुझ में ही लोग अंगुठी बहनते हैं। जब चारो मिलकर अंगुठे को कहती है कि तूं बिना काम का है, विरुप है, शोभा बिगाड़ने वाला है। यह सुनकर अंगूठा नाराज हो गया और कहने लगा ठीक है तुम सभी मुझ से अलग हो जाओ स्वयं अपना व्यवहार चलाओं। इसकेबाद ही विवाह का मौसम आ गया। विवाह प्रसंग में बर को मस्तक पर चंदन लगाकर चावल लगाने का काम तो अंगूठा ही करता है। इसके अलांवा भौजन में अंगूठे की उतनी ही उपयोगिता है। दूसरी वात यह कि जब शरदी हो जाती है तब नाक साफ करने का काम अंगूठे के बिना संभव नहीं। जब लिखना होता है तब अंगूठे की बहुत आवश्यकता होती है। किसी पर नाराज होकर या प्रेम में भी चुटकी भरना हो तो बिना अंगूठे के अशक्य है। अब इस तरह का अंगूठे के विना कार्य अंगुलियों के लिये परेशानी का हो गया। अंगुलियां अंगूठे से माफी मांगने लगी कि अब हम आपके प्रति गलत विचार नहीं रखेंगी, आप घर वापस चलो। अब उदाहरण से मुख्य उद्देश्य पर आते हैं। भगवान ने इस हाथ के माध्यम से यह उपदेश दिया है कि जब मुठ्ठी बंद करें उस समय उसके भीतर कोई अनाज होतो एक दाना भी नहीं गिरेगा। कितनी पांचो में

दृढता आजाती है, कितनी एकता रहती है जिससे भीतर से बाहर एक दाना बाहर नहीं आ सकता । इसीलिये तो कहते हैं कि बंद मुठी लाख की । यह एकता का उपदेश है । जब कभी एकता की वात करनी हो तब भी मुठ्ठीबन्द करके दिखाते हैं । शक्ति का प्रदर्शन भी मुठ्ठीबंद से किया जाता है ।

अपनी शोभा, अपना सुख, अपना गौरव, अपनी खांदानियत सब कुछ एकता में हैं । इसीलिये भगवान स्वामिनारायण एक हाथ अभय मुद्रा का दिखाते हैं । जिससे यह प्रतीति होती है कि यदि आप एकता के साथ रहोगे तो मेरा हाथ तुम्हारे मस्तक पर रहेगा । आप भी दु:खी नहीं होगे । देखा मित्रो ! भगवान हाथ की अंगुलियों से कितना सुंदर उपदेश देते हैं ।

•

सत्त्गुण का मूल सत्संग है

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

जिस तरह पानी के बिना वृक्ष सूख जाते हैं, इसी तरह सत्संग के बिना संस्कार सूख जाता है । इस पर तुलसीदासजीने लिखा है कि – बिनु सत्संग विवेक न होई । रामकृपा बिन सुलभ न सोई ॥ सत्संग के बिना अपनी कमी ख्याल नहीं आयेगी । स्वयं का दोष देखना हो तो नित्य कथा प्रवचन सुने तथा संत समागम करे कारण यह कि कुछ ऐसी कमी होती है जो स्वयं के ख्याल में नही आती । इसलिये मान-अभिमान, घमंड इत्यादि का त्याग करके सत्संग में प्रवृत्त हो जाना चाहिये, अन्यथा अधोगति को प्राप्त होंगे ।

अपना ध्येय मोक्षरुप कल्याण के मार्ग से जब हटता है तो उस समय सत्संग का बल मिल जाता तो रक्षा हो जाती है । धीरजाख्यान में निष्कुलानंद स्वामी ने बड तथा भींडी की एक बात की है । एक किसान के खेत में एक बट वृक्ष था, वह वृक्ष उस किसान के लिये छत्र का काम करता था । बट वृक्ष की धीमे गति होती है वह धीरे-धीरे बढता है । संयोगवश उसी के नीचे एक भींडी उग निकली । उसकी गति दिन दूनी रात चौगुनी थी । उस भिन्डी को अहंकार आगया कि यह बट वृक्ष वर्षो से इतना का इतना है और मैं इसके उपर चली जाऊँगी । इसलिये उसने बट वृक्ष से कहा तूं मुझे जगह दे दे मैं तुम से भी अधिक बढने वाली हूं । जबकि वह बट वृक्ष कितने ही झंझावात – तूफान को देखा था इसलिये उसने हंसते हुये कहा अरे भींडी देवी यह भाद्रमास पूरा होने दे फिर विचार करेंगे । फिर मैं तुम्हे जगह दे दूंगा । इसके बाद भाद्रमास पूरा होते ही भींटी सूख गयी जब कि वह बटवृक्ष हजारों वर्ष से जैसे का तैसा सुस्थिर खड़ा रहा । निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि –

भादेवड भीडों तडो वडे, सामो वडथी वधे वशेक ।
निष्कालनंद कहे नमूलियांनी, अंते टके नही टेंक ॥

मूल विना की भीन्डी बट वृक्ष के सामने कबतक टिक सकती है । इसी तरह सत्संग बिना अबुधजीव भगवान तथा संतो के बीच में कब तक टिक सकता है । इसलिये जिन्हे निष्ठा का, श्रद्धा का, भक्ति का, उपासना का, मजबूत मूल न हुआ हो ऐसे कहने के लिये भक्त मान-अभिमान में फंसकर भाद्रमास की भीन्डी की तरह शीघ्र विकसित होने वाले स्थायी निष्ठावालों के सामने कबतक रुक सकते हैं । निष्कुलानंद स्वामी के शब्द नस के इन्जेक्शन की तरह हैं । कृपा करके भाद्रमास की भीन्डी की तरह नही बनना, बनना तो बट वृक्ष की तरह । सत्संग के मार्ग पर चलना । भले गति धीमी हो, लेकिन दुर्गुणों के सामने दृढता तो होनी ही चाहिये । तभी सफलता मिलेगी । तभी अक्षरधाम की प्राप्ति होगी । इस तरह निष्कुलानंद स्वामी कहते हैं ।

नीचे के मंदिर में नित्य दर्शन के लिये
जेतलपुर : ™www.jetalpurdarshan.com™
महेसाणा : www.mahesanadarshan.com
छपैया : www.chhapaiya.com

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
(इन्द्रियो के संयम से परमात्मा के सच्चे सुख की प्राप्ति

संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

जब हम प्रातः पूजा करने बैठते हैं तब हमारे तथा भगवान के बीच अंतर होता है क्या ? इसके उत्तर में हाँ आयेगा, वह होगा अंतर विचारों का । इसीलिये हमारे तथा भगवान के बीच में अंतर रहता है । वर्तमान युग के अनुसार कलियुग का प्रभाव सार्वत्रिक है । जिससे भगवान के साथ एकाकार संभव नहीं होपाता है । परिणाम स्वरुप परमात्मा के सच्चे सुख से वंचित हो जाते हैं । हम अच्छी तरह विचार करें तो यह स्पष्ट होगा कि अन्तःकरण उतना नहीं परेशान करता जितना इन्द्रियां परेशान करती है । अपनी अन्तरात्मा तो सचेत करती रहती है कि ऐसा नहीं करना चाहिये । परंतु हम इन्द्रियों पर संयम नहीं रखपाते परिणाम स्वरुप इन्द्रियों के गुलाम हो जाते हैं । जैसे अन्तरात्मा सचेत करती है कि बाहर का नही खाना चाहिये, पर स्वादिन्द्रिय समझाती है कि अमुक बहुत अच्छा है आज उसे खालेते है फिर नहीं खायेंगे । इससे यह स्पष्ट होता है कि हम इन्द्रियों के गुलाम नहीं है तो क्या है ? जिस तरह कोई मालिक अपने सेवक को काम करने को कहे वह यदि न करे तो वह मालिक मालिक से मिट कर सेवक बन जाता है । इसी तरह अपना जीवात्मा है । वह स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर का मालिक है । परंतु वह मन तथा इन्द्रियों के ऊपर से कन्ट्रोल हटा देता है, जिससे मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम हो जाता है । इन्द्रियों पर संयम रखने से पाप का नाश होता है । पाप के नाश होने से सरलता पूर्वक भगवान में प्रीति हो ने लगती है । भगवान में प्रीति मोक्ष की साधिका है । इस तरह इन्द्रियों पर संयम रखकर जो भी भगवत भजन भक्ति करते हैं उससे परमात्मा जल्दी प्रसन्न होते हैं । जिस तरह मंदिरमें महाराज के सामने कीर्तन गाते हैं उस समय मन में ऐसा भाव आता है कि हमें कोई देखता होगा, हम अच्छा गारहे हैं या नहीं ? लोग मेरी प्रशंसा करेंगे या निंदा । इस तरह का भाव नहीं आना चाहिये । अपना ध्यान केन्द्रित करके भगवत परायण होकर कीर्तन-भजन में मन लगाना चाहिये । इस पर एक उदाहरण है - कि शाहनसाह अकबर के राज्य में तानसेन नाम के एक गायक कलाकार थे वे बहुत सुन्दर गाते थे। उनके गान विद्या को सुनकर अकबर ने पूछा कि यह गान विद्या आपको किसने सिखाया । तब तासेनने कहा कि मेरे गुरु हरिदासने यह विद्या सिखायी है । अकबर उनके गुरु से मिलने को कहते है, दोनो गुरु के पास मिलने जाते हैं। वहाँ पहुँचे तो देखा गुरुजी भावपूर्ण गीत गा रहे थे। वह वही गीत गा रहे थे जो तानसेन अकबर के यहां गाये थे। गुरु हरिदास के गीत को सुनकर जो आनंद की अनुभूति हो रही है वह अनुभूति तानसेन में नही थी इसका क्या कारण ? तब तानसेन ने कहा कि गुरुजी गीत गा रहे हैं वह मात्र ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये गा रहे हैं । मैं जो गीत गारहा था वह आपको प्रसन्न करने के लिये गा रहा था। इसलिये दोनो के आनंद में अन्तर है । इसी तरह हमारी भक्ति भी है । जो मात्र परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये होनी चाहिये । भगवान के पास कभी कुछ मांगे विना निःस्वार्थ भाव से भक्ति करनी चाहिये । भगवान हमारा यह काम करदें, इस तरह की अपेक्षा के बिना जो प्रभु भजन होगी तो निश्चय ही सुख की प्राप्ति होगी । जीवन में सुख या दुःख के कर्ता श्रीजी महाराज

है, उन्ही को समर्पित करके यदि कोई काम किया जाय तो दुःख भी सुखमय हो जायेगा । भगवान में कभी कमी नहीं देखनी चाहिये । इस प्रकार की भक्ति में दिव्य आनंद की प्राप्ति होगी । परमात्मा के सच्चे सुख की प्राप्ति होगी ।

वीजापुर की वजीबाई

- गीताबहन लीलाधरभाई पित्रोडा (जोरावनगर)

महेसाणा जिला के वीजापुर गाँव में सथवारा जाति की वजीबाई निष्ठायुक्त सत्संगी थी । उनके घर कोई भी साधु संत आवे उन्हें बड़ी श्रद्धा के साथ भोजन कराती थी । एकवार रामदास नाम के साधु उनके यहाँ आये उनके रहने खाने की व्यवस्था की, वे बारह दिन तक रहे । स्वामी कथा सुनाते बड़ी श्रद्धा के साथ बजीबाई सुनती । सत्य असत्य का ख्याल कथा के माध्यम से आया । सत्संग की वात सुनकर बजीबाई तथा उनके पति सत्संगी हो गये । इसके बाद अद्‌भुतानंद स्वामी बिजापुर में गये वहाँ बजीबाई के घर रुके ।

स्वामी के प्रभाव से उन्हे भगवान स्वामिनारायण में निश्चय हो गया । उनके मन में यह विचार भी आया कि हमारे यहाँ सच्चे संतो को ही ठहरना संभव है अन्य को रुकने नहीं दूंगी । मात्र स्वामिनारायण भगवान का सत्संग करेंगी अन्य का नहीं ।

एकवार महाराज ने बजीबाई की परीक्षा लेने का विचार किया । वे गढपुर से साधु का वेशधारण करके बजीबाई के घर आये । लेकिन बजीबाई ने संकल्प किया था कि स्वामिनारायण के साधु को छोड़कर अन्य को ठहरने नहीं देना है । यहाँ स्वामिनारायण भगवान साधु बाबा का रुपधारण किये हुये थे। पहुँचकर जय द्वारिकाधीश, जय रामचन्द्र की ऐसा बोले । आवाज सुनकर बाहर आयी और पूछी आप कौन है ? कहाँ से आ रहे हैं ? साधु वेश धारी श्रीहरिने कहा मैया ? हमतीर्थाटन करने निकले है । काशी, रामेश्वर, जगन्नाथ की यात्रा करते हुये द्वारका की तरफ जा रहे हैं । रास्ते में आपका नाम सुनकर आपके यहाँ रात्रि निवास के लिये आये हैं । यह सुनते ही बजीबाईने कहा यहाँ जगह नहीं है कही अन्यत्र व्यवस्था खोजलीजिये, आप जैसे धूर्त साधु बहुत घूमते रहते हैं । तीर्थ करने से कोई फायदा नहीं, कल्याण चाहते हो तो स्वामिनारायण की भजन करो तो तुम सभी का कल्याण हो सकता है । महाराज बजीबाई से कहते हैं कि आप ऐसा क्यो कहती है ? शास्त्र में तीर्थ का खूब महत्व बतलाया गया है । आप उसकी निन्दा मत कीजिये । बजीबाई ने कहा हम केवल स्वामिनारायण भगवान को जानती है, उनके सिवाय अन्य किसी की चर्चा हमें नही करनी है । स्वामिनारायण भगवान प्रत्यक्ष है । सम्पूर्ण ब्रह्मांड के कर्ता, धर्ता है । स्वामिनारायण भगवान की निंदा करोगे तो धक्का मार के भगाया जायेगा ? महाराजने कहा, अरे ! वह स्वामिनारायण तो भूत को वश में किया है तथा सारे जगत को भ्रम में डाल दिया है । उसका जो प्रसाद खाता है वह वश में होजाता है । यह सुनते ही वजीबाई क्रोधमें आकर भला बुरा कह ही रही थी कि उसी समय वजीबाई के पति आगये और कहने लगे कि ओ बाबाजी आप यहां से चले जाईये । महाराजने कहा कि माताजी आप आज की रात यहां रहने दीजिये कल सुबह हम चले जायेंगे । बहुत हठाग्रह करने पर वजीबाईने एक कोने में रहने की जगह दे दी । अब बाबाने कहा माताजी हमें बहुत भूख लगी है - भोजन करा दीजिये । उसने कहा इतनी रात को अब कहाँ भोजन होगा । महाराजने कहा कि आप डिब्बे में अठारह लड्डु रखी है, उसे दे दीजिये । अब वजीबाई विचार में पड़ गयी की जो भगवान के लिये रखे हैं, वह बाबा को कैसे पता चल गया । वह लड्डु लाकर देदी महाराज खा लिये और सोने लगे तो कहे कि यह सोने की जगह अच्छी नहीं है आप पलंग-गद्‌दा, रजाई, तकिया इत्यादि की

व्यवस्था कर दीजिये। वे नाराज होकर कहने लगी कि अभी रात विताने की बात कर रहे थे अब व्यवस्था मांगते हो, यह सभी मेरे पास नहीं है।

महाराजने कहा, भीतर के कक्ष में पलंग है तथा पेटारे में नया गद्दा, रजाई, तकिया सभी है। यह सुनते ही बजीबाई को आश्चर्य हो गया कि इस बाबा को कैसे पता। बाईने कहा यह सब महाराज के लिये है। महाराज ही सत्य हैं अन्य सभी असत्य है। फिरभी शयनीय सभी व्यवस्था करके दरवाजा बन्द करके सो गयी। कुछ समय पहले विसनगर के सूबा ने कहा था कि तुम स्वामिनारायण की कंठी निकाल दो, यदि तुम्हारे स्वामिनारायण सत्य हों तो तुम्हारी गली में जो कूये के पास में पीपल का वृक्ष तथा तुलसी की क्यारी को पांच हाथ दूर कर दिव दिया। महाराज उस रात में यह विचार कर लिए कि वजीबाई की निष्ठा पक्की है तथा सत्यको साबित करना है इसलिये महाराजने वहीं से अपना पैर बढाकर पीपल तथा तुलसी के क्यारी को पांच हाथ दूर कर दिया। सबसे पहले प्रातः उठकर विसनगर से गढडा चल दिये। एकबार गढपुर में उत्सव मनाया जा रहा था। उस समय वजीबाई गढपुर आयी थी, महाराज के चरण की पूजा कर रही थी उस समय महाराजने कहा देखो यह वही चरण है जो आधी रात में पीपल को तथा तुलसी की क्यारी को पांच हाथ दूर कर दिये थे। यह सुनकर बाई शरमा गयी औ महाराज से क्षमा मांगी। महाराज उनकी निष्ठा की खूब प्रशंसा किये और कहने लगे -

धन्य धन्य एनो सत्संग, धन्य अडग निश्चय अंग।
करी परीक्षा श्रीपरमेश, तोय निश्चय डग्यो न लेश॥
वजीबाई नु चरित्र जेगाशे, तेने अडग निश्चय थाशे।
थाशे प्रभु मां प्रीत अभंग, शिर साटे थाशे सत्संग॥

•

दो स्वरुप में घनश्याम

- तहलावहन अतुलभाई पोथीवाला (मेमनगर)

दीपावली का दिन आया। धर्मपिता तथा भक्तिमाता दोनो मिलकर धनतेरस से अन्कूट की तैयारी प्रारंभ कर दिये। घर में ठाकुर जी को अन्नकूट का भोग लगाने के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के (छप्पन प्रकार के) व्यन्जन तैयार करवाये।

दीपावली के दिन प्रातः से ही भक्तिमाता, सुवासिनी भाभी तथा गाँव की अन्य स्त्रियां धर्मपिता के घर आकर रसोई बनाने लगी। जिसमें जिसकी कला थी वह भोजन प्रदार्थ तैयार करने में लग गयी। लेह्य, चोस्य, पेय, भक्ष्य इत्यादि प्रकार के सभी व्यन्जन तैयार किये गये।

इधर सुन्दरता की खान घनश्याम धर्मपिता के साथ भगवान को अलंकृत करने लगे। नाना प्रकार के पोशाक पहनाये। आभूषण पहनाये। चारो तरफ वंदनवार - तोरण से अलंकृत किया गया। दीपमाला से मंदिर जगमगा उठा। ये सब करते दोपहर का इग्यारह बज गया। सभी पक्वान्न ठाकुरजी के सामने लाकर सजादिया गया। चांदी के लोटे में पानी सामने रखकर सभी लोग बैठकर भोजन के गीत गाने लगे। बाद में धर्मदेव आरती तैयार करके आरती करने लगे। सम्पूर्ण ग्रामजन धर्मदेव के घर आये। अन्नकूट का दर्शन करके आनंदित हो गये। ऐसा लग रहा था जैसे सम्पूर्ण छपैया गाँव यहाँ मूर्तमंत खड़ा हो गया हो। जब धर्म देव आरती कर रहे थे तो सभी को एक आश्चर्य दिखाई दिया कि बाल घनश्याम कभी ठाकुरजी के पास हैं तो कभी धर्मदेव के पास। इस तरह जब तक आरती हुई तब तक घनश्याम का दो रुप दिखाई दिया। सभी के आश्चर्य की सीमा न रही। सभी को विश्वास हो गया कि अपने ठाकुरजी ये घनश्याम महाराज ही है।

धर्मदेव इस लीला को देखकर समझ ही गये थे कि श्री घनश्याम ही बड़े भगवान है। वे तुरंत ही एक बड़ी थाली मंगवाये। उसमें सभी व्यन्जन रखकर घनश्याम को भोजन के लिये दिये। घनश्याम अपने छोटे

भाई इच्छाराम को बुलाये । दोनो भाई ठाकुरजी के सामने भोजन करने लगे । यह दृश्य देखकर सभी को अतिशय आनंद हुआ । दोपहर में दो बजे तक सभी अन्नकूट का दर्शन किये । बाद में घनश्याम अपने हाथों से ग्रामवासियों को अन्नकूट का प्रसाद दिये ।

भगवान को अर्पित प्रसाद स्वयं भगवान ने दिया है यह भाव रखकर सभी अपने घर गये ।

आज छपैया के ग्रामवासी दीपावली के शुभ अवसर पर प्रत्यक्ष प्रभु का दर्शन किये ।

•

पूंजाजी का प्राण रुक गया

- पटेल दीपाली भरतभाई (सोजा)

प्राणवी गांव के भक्त पूंजाजी डोडिया श्रीहरि के अनन्य भक्त थे । सच्चीदानंद स्वामी की तरह श्रीहरि में एक निष्ठा थी । श्रीहरि के स्वधाम गमन का समाचार सुनकर बेहोश हो गये । स्थिति बिगड़ने लगी । उनकी धर्म पत्नी ने विचार किया कि श्रीहरि के स्वधाम का समाचार सुनकर यह स्थिति हुई है इसलिये इन्हें गोपालानंद स्वामी के पास ले चले ? पति को लेकर गढडा आयीं ।

गोपालानंद स्वामीने उस भक्त से कहा कि श्रीहरि की आज्ञा थी कि कोई मेरे जाने के बाद आत्महत्या नहीं करेगा । जो ऐसा करेगा वह गुरु द्रोही कहा जायेगा । वह अक्षरधाम का अधिकारी नहीं होगा । भक्त तुम स्वस्थ होजाओ । देखो हम सभी महाराज की आज्ञा से देह धारण किये हैं, अन्यथा तुम्हारी जैसी स्थिति होती ।

पूंजाजी कहने लगा स्वामी ! मैं जानबूझ कर ऐसा नहीं किया हूँ यह महाराज के वियोग के कारण हुआ हैं ? पूंजाजी रात्रि के समय ध्यान में बैठा, उसी समय महाराज वहाँ आते हैं और उसके मस्तक पर हाथ रखकर कहते हैं कि क्यों वियोग सहन नहीं हो रहा है ? हाँ महाराज ! तो धाम में आना हैं ? हाँ महाराज ! आपका वियोग सहन नहीं रो रहा है । इसलिये महाराज उसे अपने धाम में ले गये ।

•

कलियुग में चमत्कार - जामनगर की जवेरबाई

- गांगाणी जशुबहन दयालजीभाई (नवावाडज)

जवेरबाई का जन्म कच्छ के एक ब्राह्मण के घर में हुआ था । विवाह जामनगर में हुआ था । वे अकेले श्री स्वामिनारायण भगवान की भक्ति करती थी । वे पर पुरुष का स्पर्श नहीं करने का व्रत ली थी । संयोग वश उनके आँख से दिखाई देना बंद हो गया । उन्हें डॉक्टर के यहाँ दिखाया गया तो । दूर से देखकर डॉक्टरने कहा आपकी दोनों आँख खराब हो गयी है, आपरेशन कराना पड़ेगा । अब वे महाराज से प्रार्थना करने लगी कि हे महाराज ! मेरी लाज आपके हाथ में हैं । मैं पर पुरुष का स्पर्श नहीं करती हूं। इस व्रत की लाज रखना । महाराज का दर्शन करने मंदिर में गयी वहाँ यही प्रार्थना करते-करते प्रदक्षिणा कर रही थी उसी समय महाराज एक सुन्दर स्त्री का रुप धारण करके साथ में प्रदक्षिणा करने लगे । बाई के मस्तक पर हाथ रखे और अपने हाथों से आँख में दवा डाल दिये, उनकी सभी पीड़ा स्वयं ले लिये । बाई की आँख खुली तो वे अदृश्य हो गये थे। यह कितनी प्रभु की दयालुता । अपने भक्तों के लिये वे क्या नहीं करते । कौन सा रुप नहीं धारण करते । हम प्रभु को प्रार्थना करें कि हे प्रभु ! आप जवेरबाई की तरह हमारी निष्ठा रखना ।

धार्मिक परीक्षा के विषय

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा ता. २०-१२-०९ रविवार को प्रत्येक केन्द्रो से ली जायेगी । जो बाकी केन्द्र हों वे अपनी नामावली ता. ३०-१०-०९ तक भेंज दे ।

-संचालकश्री

oooooooooooooo प्रश्नपेटी oooooooooooooo

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर

प्र.१ पोताना आश्रित जे सत्संगी तेमने अधिकार प्रमाणे पोत पोताना धर्म ने विषे राखवा अने साधुने आदर थकी मानवा तथा सच्छास्त्र नो अभ्यास आदर थकी करवो श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री के किस श्लोक में यह वात कही है ?

प्र.२ अमें अमदावाद में श्री नरनारायणदेवनी प्रतिष्ठा करवा गया हता त्यारे हजारो माणसोनो मेलो भरायो हतो । अमारा अंतरमां एक भगवान नरनारायणदेव विना कोई गम्युं नथी यह वात श्रीजी महाराजने अपने मुख से किस वचनामृत में कही हैं ?

प्र.३ श्री हरिशंभव महा काव्य नामक ग्रंथ किसने लिखा है ?

प्र.४ शास्त्र में अष्टसिद्ध तथा नवनिधिका नाम आता है । वे नवनिधिकौन हैं ? उनका नाम लिखों ?

प्र.५ गाँव वसो के गिरधरभाई पाटीदार गढपुर में महाराज का दर्शन करने गये थे । वे श्रीहरि को दंडवत प्रणाम करके चरण स्पर्श किये । गिरधरभाई किस संकल्प को लेकर गढपुर आये थे ?

प्र.६ इच्छाराम महाराजने देहत्याग किया तथा श्रीजी महाराज उन्हें ले ने पधारे, उस समय महाराजने ब्रह्मानंद स्वामी को कौन सा कीर्तन बोलने को कहा ?

प्र.७ सत्संगी आयो सौ नामनुं, नामनुं नामनुं रे..... सत्संगी आयो सौ नामनुं, भातु अक्षरधामनुं रे ..... यह सुंदर कीर्तन किसने बनाया है ?

जुलाई २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१) व.म.प्र. ३- । (२) जाओ तुम्हारे घर जन्म होगा, बिल्ली के ऊपर भी पानी छींटा तुम्हारा भी जन्म सत्संगी के घर होगा । बिल्ली मरकर कंदोई के घर कन्या के रुप में जन्म ली । मूषक पुरुषोत्तम के घर जन्म लिया । वह महान संत गोपालानंद स्वामी हुआ । (३) संतजन सोय सदा सोय भावे इस पद में वर्णन किया गया है । यह वात स.गु. गोपालानंद स्वामी ने कहा है । (४) १. लोटा २. गिलास ३. ताम्रपात्र ४. आचमनी ५. अर्ध्यपात्र । (५) १. भक्ष्य २. भोजन ३. लेह्य ४. चोस्य । (६) जे पुत्रने तात नहीं भणावे, बालपणे लांड घणा लडावे..... ते पुत्रनो शत्रु पिता गणाय, युवान थतां सुतने जणाय । (७) स.गु. मुक्तानंद स्वामी ।

१. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
२. सां.यो. उषाबा, शिल्पाबा - सुरेन्द्रनगर
३. साकरबहन नटवरलाल पटेल -नांदोल
४. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
५. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
६. कैलासबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
७. मेघाबहन कमलेशकुमार पटेल - कुहा
८. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर
९. सां.यो. भारतीबा, मंजुबा स्वा.ना. मंदिर हवेली - अमदावाद
१०. विणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
११. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोड़ीया
१२. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
१३. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
१४. ज्योत्सनाबहन राजूभाई पटेल - आनंदपुरा (कड़ी)
१५. सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई
१६. पटेल गोरधनभाई शंकरदास - सोजा
१७. अमृतलाल के. मोदी - सोजा
१८. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१९. पटेल शिल्पा मणीलाल - दहेगाँव
२०. पटेल विष्णुभाई जीवाभाई - सीतापुर
२१. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलालवाला

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में गणपतिजीका उत्सव बड़ी भव्यता से मनाया गया

श्रीहरि समकालीन संप्रदाय में परंपरागत उत्सव अपने मंदिरो में आज भी धूमधाम के साथ मनाये जाते है। विगत भाद्रमास शुक्ल-११ जलझीलणी एकादशी को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर में दोपहर १-०० बजे अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में ठाकुरजीकी पूजा विधिकरके विशाल संत भक्तों के साथ तथा श्री नरनारायणदेव उत्सवी मंडल के साथ उत्सव करते हुये परंपरागत मार्ग से श्री गणपतिजी का भव्य जूलुस निकाला गया था। दोपहर को नारायणघाट साबरमती के पवित्र जल में श्री गणपतिजी का धूमधाम से विसर्जन-पूजन-आरती करके रात्रि में ७-०० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ संत-हरिभक्त ओरियन्टल बिल्डिंग से धून-भजन करते हुये कालुपुर मंदिर आकर विश्राम लिये थे। इस प्रसंग पर महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा को. पार्षद दिगम्बर भगतने सुंदर आयोजन किया था।

- को. जे.के. स्वामी

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजी का अमेरिका में सत्संग के लिये विचरण

देश तथा विदेश में श्री नरनारायणदेव गादी के अनेकों मंदिर हैं। जहाँ पर अपने प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी रात दिन हरिभक्तों को सुख देने के लिये सत्संग में विचरण करती रहती है। विगत मई २००९ से सितम्बर २००९ तक प.पू. बड़ी गादीवालाजी अमेरिका पधारी थी। वहाँ के अधोनिर्दिष्ट मंदिरों में तथा आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो में पधारकर महिलावर्ग को अलौकिक दर्शन का सुख दिया था। जिस में २२ से २४ जुलाई बोस्टन के मंदिर में तथा श्री रेखाबहन के यहाँ पधारी थी। वहीं पर रुककर लगातार तीन दिन तक बहनो को कथा प्रवचन करके आशीर्वाद दी थी। २५ से २८ जुलाई - न्युयोर्क में प.भ. जयाबहन के यहाँ निवास कीं। जहाँ पर बड़ी संख्या में महिलावर्ग एकत्रित होकर भजन-कीर्तन, कथा द्वारा आशीर्वाद का सुख प्राप्त किया था।

१ से ३ अगस्त बोस्टन मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पधारी थी। प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक षोडशोपचार विधिसे किया गया था। इस प्रसंग पर बहनो ने प.पू. बड़ी गादीवालाजी के समक्ष विशेष भजन-कीर्तन तथा श्रीजी महाराज के सर्वोपरि निष्ठा पर बल दिया था। ४ से ९ अगस्त तक शिकागो के मंदिर में दर्शनार्थ पधारी वहाँ सतत पांच दिन तक सत्संगी बहनो को हार्दिक आशीर्वाद का सुख प्रदान किया।

९ से १६ अगस्त तक लोस एजलेस मंदिर में नित्य प्रातः तथा सायं संतो की कथा तथा बहनो के साथ सुन्दर सत्संग की गोष्ठी तथा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की महिमा समझाकर पूज्या गादीवालाजी द्वारा बड़ी संख्या में मुमुक्षु बहनो को सत्संगी बनाया गया। सभी लगातार आठ दिन तक भगवानमय हो गयी थी।

१७ से २३ अगस्त तक **UTAH** चेप्टर में भावना बहन ईश्वरभाई शर्मिलाबहन भरतभाई, मनीषा भावेशभाई, शारदाबहन मूलजीभाई, कांताबहन तथा मंजुबहन एवं अन्य बहनों के यहां सत्संग सभा का आयोजन करके इस विस्तार में मूल संप्रदाय की पहचान तथा नये मुमुक्षुओं को भगवान के स्वरुप का यथार्थज्ञान कथा द्वारा कराकर प्रसन्न किया। इस तरह विदेश में सतत सत्संग में विचरण करके प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी बहनों को सर्वोपरि श्रीहरि की भजन-स्मरण तथा कथा एवं दर्शन आशीर्वाद देकर न्युजर्सी पधारी थी।

- लीलाबहन पटेल

वडनगर

सुप्रसिद्ध गुजरात की ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी वडनगर के शिखरी मंदिर से भाद्रपद शुक्ल-१५ जलझीलड़ी एकादशी के दिन प्रातः १०-०० बजे से ठाकुरजी का जुलूस बैन्डपार्टी के साथ स्वामिनारायण महामंत्र की धुन करते हुये निकला था। यह यात्रा नगर के मातोर अटारी, भावसार ओल, कापड़ बजार, बारोटी बजार जैसे राजमार्ग से यह यात्रा निकली थी। इस मार्ग में आने वाले सभी हरिभक्तों के घर पदार्पण करते हुये सायंकाल ६-०० बजे प्रसादी के नागघरे पहुंची थी। वहाँ ठुकारजी को शा. नारायणवल्लभदासजी तथा अभिषेकप्रसाददासजीने नागघरा ताबाल में स्नान विधिकरायी थी। इस यात्रा में हरिभक्तों की खूब भीड़

थी। बाद में भावसार अतुलभाई छन्नालाल तथा दिलीपभाई छनालाल ने ठाकुरजीकी आरती उतारकर अलभ्य लाभ लिया था। उत्सव के साथ प्रसादी के स्थलों पर धुन-कीर्तन किया गया था। बाद में सभी को प्रसाद वितरण करके सभी विसर्जित हुये थे। - शा. नारायणवल्लभदासजी

जुंडाल

श्री स्वामिनारायण मंदिर जुंडाल में चातुर्मास की कथा में वडनगर से. शा. नारायणवल्लभदासजी पधारे थे। जो रात्रि में "श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन" के कथा का रसपान कराया था। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल जुंडाल के सभी सदस्य कथा का लाभ लेकर धन्य हो गये थे। साथ में स.गु.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने श्री ठाकुरजी का प्रसाद बनाकर भोग लगाकर हरिभक्तों को भाव से भोजन कराये थे। - हितेष पटेल, जुंडाल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में जहां आदि आचार्यश्री ने बाल स्वरुप कष्टभंजन देव को प्रतिष्ठित किया है वहाँ पर पूरे सावन मास प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से महारुद्र यज्ञ की पूर्णाहुति तथा महादेव का महाभिषेक ठाकुरजी की आरती धूमधाम से संपन्न किया गया था। मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी धूम धाम से मनाई गयी थी। श्रावण मास में श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा को. यज्ञप्रकाशदासने की थी।

जलझीलणी एकादशी : महंत स्वामी के साथ संत हरिभक्त उत्सव करते हुये कांकरिया सरोवर में जल क्रीडा कराये थे।

महिला सत्संग सभा : प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से महिला सत्संग का आयोजन किया गया था। जिस में ५०० जितनी महिलाओं ने भाग लिया था। पूज्या गादीवालाजीने भगवान की महिमा को समझाया था। उपासना नियम, निश्चय, पक्ष की वात पर भी बल दिया था। प्रति हरिजयंती के दिन सभा होती है, जिसमें बड़ी संख्या में बहने भाग लेती हैं। गादीवालाजी ठाकुरजी का भोजनालय तथा संत निवास देखकर खूब प्रसन्न हुई थी। अंत में ठाकुरजी का दर्शन करके घर पधारी थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ की हरिकृष्ण सोसायटी में रात्रि हरिदर्शन सप्ताह पारायण स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीने की थी। जिस में कांकरिया तथा मणीनगर के हरिभक्त उपस्थित होकर लाभ लिये थे। इस प्रसंग पर कांकरिया के संत तथा जेतलपुर के संत उपस्थित होकर प्रवचन का लाभ दिये थे।

- श्री न.ना.देव युवक मंडल

बामरोली (म.प्र.) मंदिर में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी की प्रेरणा से अहमदाबाद के श्री प्रवीणभाई मंगलदास उमेदराम पटेल परिवार की तरफ से अपने मंदिर में ता. २२-८-०९ से २६-८-०९ तक श्रीमद् भागवत् पंचाहन पारायण स्वा. सत्यप्रकाशदासजीके वक्तापद पर हिन्दी में सपन्न हुआ। इस प्रसंग पर श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक षोडशोपचार विधिसे किया गया था।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद से नारायणघाट के महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, को. पार्षद दिगम्बर भगत इत्यादि संत मंडल पधारे थे। कथा में कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मिणी विवाह धूमधाम से मनाया गया था। महापूजा का भी आयोजन किया गया था। स्वा. लक्ष्मीनारायणदासजीने ग्रामजनो के सहकार से अपना कार्य सरलता से सम्पन्न किया था। पाटोत्सव के यजमान पटेल उमेदराम रणछोड़राय परिवार की गं.स्व. रईबहन सांकणचंद, गं.स्व. पालीबहन मंगलदास, अ.सौ. ज्योतिबहन परसोत्तमदास पटेल इत्यादि सभी लोगों ने यज्ञ में भाग लिया था। - राजेन्द्रप्रसाद स्वामी

कालियाणी (ता. विरमगाँव)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के स्वामिनारायण मंदिर में भाद्रपद शुक्ल-११ को रात्रि में सां.यो. मंजुबा, गंगाबहन, पुरीबहन, शांताबहन इत्यादि लोग एवं गाँव की बहनो ने १२ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की थी। सम्पूर्ण मंदिर खचोखच भरा हुआ था। सां.यो. की प्रेरणा से यह कार्य संपन्न हुआ था। - प्रदीप बुटिया

जयपुर मंदिर में पाटोत्सव पारायण

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री राधाकृष्ण, श्री स्वामिनारायण भगवान का छठ्ठा पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी

तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री सुभाशभाई अंबालाल पटेल परिवार की तरफ से श्रावण कृष्ण-५ को ठाकुरजी का महिभेषिक वेदोक्त विधिसे संपन्न हुआ था। बाद में अन्नकूट की आरती की गयी थी । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में पू. पी.पी. स्वामी के मुख से वचनामृत की कथा का त्रिदिनात्मक रसास्वाद सभी ने किया था। सर्वोपरि प्रभु की सर्वोपरि उपासना का रहस्य सुनकर सभी हरिभक्त आनंदित हुये थे ।

प्रासंगिक सभा में काकंरिया के महंत स्वामी, प्रयाग राज के महंत स्वामी, जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी, ब्रह्मचारी पूर्णानंद, स्वा. माधवजीवनदासजी, शा. हरिवल्लभदासजी, शा. व्रजवल्लभदासजी इत्यादि संतो की प्रेरणा सुनने को मिली । - महंत स्वामी जयपुर

कलियुग में श्रीहरिकृष्ण महाराज के चरणारविंद का अलौकिक चमत्कार जिसके दर्शनार्थ सिद्धपुर नूतन मंदिर में भीड

महेसाणा जिले के सिद्धपुर नगर में अपना पुराना मंदिर था । समय बीतते हरिभक्तों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होने से तथा शहर से बाहर लोगों की बस्ती बढने से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति (निवृत) प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज को हरिभक्तों ने शहर के बाहर हाईवे पर शिखरी मंदिर बनाने के लिये प्रार्थना की । प्रार्थना सुकर पूज्य महाराजश्रीने स.गु.शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी को नूतन भव्य मंदिर बनाने का आशीर्वाद दे दिया । जो मंदिर पूर्णरुप से तैयार होते ही गत वर्ष कार्तिक कृष्ण-२ को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति वर्तमान आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे धूमधाम के साथ सम्पन्न हुई । परंतु हरिकृष्ण महाराज को कुछ चमत्कार दिखाना था। तथा अपने अपर स्वरुप आचार्य महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति में निष्ठा को दृढ करवाना था एवं लोग आज के कलिकाल में अन्यत्र न वह जाये इसलिये हरिकृष्ण महाराज स्वयं अषाढ गुरुपूर्णिमा के प्रात: ५-३० बजे मंदिर में नियमित सफाई करने वाले निष्ठावान हरिभक्त डायाभाई पटेल, अमृतभाई पटेल, भावेशभाई पटेल, मोहनभाई पटेल, लालजीभाई पटेल इत्यादि हरिभक्तो ने सिंहासन से लेकर हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति के चरणारविंद तक देखा तो कुमकुम वाले पैर की निशान चलने की पड़ी थी । वह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ । तुरंत पुजारी कुंजविहारी स्वामी को बुलाकर ले आये । वे मंदिर का ताला खोलकर देखे तो आश्चर्य चकित हो गये । हरिकृष्ण महाराज मूर्ति में स्वयं निकलकर लीलाचरित्र बता दिये कि हम अपने अपर स्वरुप आचार्य महाराज द्वारा स्थापित मूर्ति में प्रत्यक्ष रुप से रहते हैं । यह अलौकिक - दिव्य समाचार देश-विदेश में वायुवेग की तरह फैल गया । सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव गादी की वर्तमान प.पू. गादीवालाजी आषाढ कृष्ण-१ ता. ८-७-०९ को तथा ता. ९-७-०९ को प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा को साथ लेकर दोनो दिन मंदिर में चरणारविंद का दर्शन कराकर सभी को रहस्य बताई थी । प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरीजी की राजभोग आरती उतारकर सभी को दर्शन का सुख दिया । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री संत-हरिभक्तों के साथ ता. ८-७-०९ को सायंकाल पधारे तथा श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की संध्या आरती उतारकर चरणारविंद का दर्शन करके उसे उसी स्थिति में सभी को दर्शन हो इसलिये सीसे में रखने की आज्ञा किये । ता. १७-८-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अहमदाबाद मंदिर में महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स्कीम कमेटी के सदस्यों को साथ लेकर (विदेशकी यात्रा के तुरंत बाद) सिद्धपुर मंदिर दर्शनार्थ पधारे और चरणारविंद का अलौकिक दर्शन करके, इसी तरह सभी को दर्शन होता रहे इस तरह की व्यवस्था करवाये । धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के आगमन के बाद देश-विदेश के संत-हरिभक्तों की दर्शनार्थ भीड़ लगने लगी ।

आज भी हरिभक्तों की दर्शनार्थ गति चालू है । यह दृश्य देखने के बाद सभी के मन में यह विचार आने लगाकि केवल वहीं यह चमत्कार होना संभव है जहाँ पर श्रीहरि के अपर स्वरुप जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा किये हों । ऐसा चमत्कार तो इससे पहले भी हो चुका है । जिसकी प्रतीति सभी को हो चुकी है । - महंत स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी

सिद्धपुर मंदिर से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. प्रे

मस्वरुपदासजी की प्रेरणा से सिद्धपुर मंदिर के महंत स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी एवं पुजारी भक्तिनंदनदासजी तथा सिद्धपुर, बीलिया उमरु के करीब ८० हरिभक्त २१-८-०९ को अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पदयात्रा निकाले थे।

जिसमें महेसाणा मंदिर में भोजन करके रात्रि निवास कलोल गुरुकुल तृतीय रात्रि निवास नारायणघाट मंदिर में करके अमहदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती का दर्शन करके प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा पदयात्रा के ठाकुरजी को आरती उतरवा कर सुख अनुभव किये। सभी को महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

- दशरथभाई पटेल

लसुन्द्रा मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में भाद्रपद शुक्ल-११ जलझीलणी एकादशी को ठाकुरजी की शोभायात्रा समग्र गाँव में निकाली गयी थी। जिन्हे गाँव के तालाब में विसर्जित किया गया था। स्वामी विश्वस्वरुपदासजी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुन्दर सेवा का कार्य किया था! - कोठारीश्री

बालासिनोर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बालासिनोर के मंदिर में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत भक्तनिधिग्रन्थ का पारायण स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने किया था। हरिभक्त कथा सुनकर कृतकृत्य हो गये थे। जलझीलणी एकादशी को ठाकुररुजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। मंदिर के प्रांगण में ठाकुरजी को नौका विहार कराया गया था। ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिया गया था। घनश्याम किराना स्टोर की तरफ से सेवा की गयी थी। - रमेश भगत

कपडवंज मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का ९३ वाँ पाटोत्सव ता. २४-८-०९ को धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर से शा.स्वा. वासुदेवचरणदास तथा श्रीजीस्वरुपदासजी पधाकर कथा-पूजा का लाभ दिये थे। पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट की व्यवस्था की गयी थी। श्री विक्रमभाई ने यजमान पद का लाभ लिया था। हरिभक्त पाटोत्सव दर्शन एवं कथा सुनकर कृतार्थ हो गये थे। - बलवंतभाई कोठारी

नवा वाडज मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण मास में श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा का शा.स्वा. हरिओंप्रकाशदासजी महंत शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी, शा. सूर्यप्रकाशदासजी तथा चैतन्यस्वरुपदासजीने लाभ दिया था। ता. २३-८-०९ को झूलोत्सव के प्रसंग पर "दादाना दरबार" में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दर्शन-आशीर्वाद देकर अलौकिक सुख प्रदान किये थे। ३०-८-०९ के दिन श्री अशोकभाई एन. पटेल की तरफ से १७ वीं वार्षिक सभा का आयोजन माताजी के स्मरणार्थ था। - शंभुभाई पटेल

नरोडा आदिश्वरनगर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहां के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १२-७-०९ से ता. १३-८-०९ तक श्रावण मास में झूलोत्सव का दर्शन तथा सायंकाल भागवत कथा का लाभ रसिकभाईने दिया।

ता. १०-८-०९ से १४-८-०९ तक रात्रि में ९ से १० बजे तक नारायणघाट मंदिर से पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर सतत पांच दिन तक कथा का सुंदर लाभ दिया था। जन्माष्टमी उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। कक्षा १० तथा १२ के उत्तम प्रतिशतलाने वाले विद्यार्थियों का बहुमान किया गया था। - कौशिकभाई पटेल

टोरडा मंदिर में बापूनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल का शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ६-९-०९ रविवार को बापूनगर श्रीनगरनारायणदेव युवक मंडल का शिबिर इडर देश के तीर्थस्थान टोरडा मंदिर में रखा गया था।

स.गु. गोपालानंद स्वामी के प्रागट्य स्थान में सुंदर नैसर्गिक वातावरण में प.पू. आचार्य महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर सत्संग सभा आरंभ हुई थी। उत्साही युवानों ने श्री स्वामिनारायण मंदिर मूल संप्रदाय के सिद्धांत तथा धर्मवंशी आचार्यपद, गुण-अवगुण का परिणाम, दलबदलना नही, इन विषयों पर संवाद तथा नाटक एवं सौराष्ट्र का रास गरबा प्रस्तुत किया गया था। प.पू. आचार्य

महाराजश्री को प्रसन्न किया था । बाद में स्वा. वासुदेवचरणदासजी तथा स्वा. आनंदजीवनदासजी एवं छोटे पी.पी. स्वामी ने प्रासंगिक प्रवचन करके सभी को सदुपदेश दिया था।

प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद में बताया कि श्रीजी महाराज ने हमें जो कुछ दिया है वह पूर्ण है । उसी में निष्ठा रखनी चाहिये । उसी में सुख है । अदलाबदली में कुछ नहीं है । महाराज द्वारा प्रतिपादित धर्म-नियम-आचार-विचार-मर्यादा को जो बदले उसे विमुख कहते हैं । अपने मंदिरों में आरती, भजन भक्ति इत्यादि सभी का निश्चित रुप है तथा निश्चित समय है । सभी वात प.पू. महाराजश्री ने उदाहरण के साथ समझायी थी । इस प्रकार की सप्रमाण युक्त वात सुनकर सभी के मन में जो विकार था तथा जो प्रश्न था सब अपने आप शांत हो गया । पूज्यमहाराजश्रीने सभी को सम्प्रदाय सम्बन्धी किसी भी प्रश्न को पूछने की छूट की थी फिर भी किसी को पूछने की जरुरत हीं नही पड़ी।

इस प्रसंग पर टोरडा मंदिर के महंत स्वामीने नव युवानों के लिये सुन्दर प्रसाद की व्यवस्था की थी । जिसके यजमान श्री अरविंदभाई दोंगा थे।

शिबिर के अंत में प.पू. महाराजश्री, संत तथा सभी युवानों के साथ पदयात्रा करके नदी के सामने वाले किनारे पर गये जहाँ शिवालय में प्रसादी के गणपतिजी को खुशाल भट्टने (गोपालानंद स्वामी का पूर्वागम का नाम) गणेश चतुर्थी के दिन प्रत्यक्ष लड्डु को खिलाया था।

भक्तजन लौटते समय इडर तथा सापावाडा मंदिर में दर्शन किये थे। - गोरधनभाई वी. सीतापरा

इडर श्री स्वामिनारायण मंदिर

इडर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से ठाकुरजी की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से ठाकुरजी के समक्ष श्रावण मास में नये-नये झूले सजाकर उसमें ठाकुरजी को झुलाया गया था । कृष्ण जन्माष्टमी के दिन विशेष उत्सव मनाया गया था । अगल-बगल के गांवो के हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे । रात्रि में कृष्ण जन्मोत्सव पर धुन-कीर्तन के साथ जन्मोत्सव भव्यता से मनाया गया था। - को. सत्यसंकल्पदास

आदरडी (ईडर देश)

श्री प्रवीणभाई मोघाभाई पटेल की माताजी गं.स्व. गंगाबहन मोघाभाई पटेल के जीवन चर्या के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. आनंदजीवनदासजी, शा. छपैयाप्रसाददासजी तथा स्कीम कमेटी के सदस्य डॉ. के. के. पटेल, श्री डी.के. पटेल साहबने प्रासंगिक प्रवचन किया था। अं तमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया था । महंत स्वामी के प्रेरणा से प्रसंग सुंदर ढंग से संपन्न हुआ था । इस प्रसंग पर टोरडा, प्रांतीज, सापावाड मंदिर के महंत तथा श्री डॉ. के. के. पटेल, डाह्याभाई के. पटेल इत्यादि हरिभक्त पधारे थे । सभा संचालन हरिजीवन स्वामीने किया था।

- को. सत्यसंकल्पदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से झूलोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । महंत जगदीश स्वामी तथा महंत हरिजीवन स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा सभी सत्संगियोने तन, मन, धन से सेवा की थी । जन्माष्टमी की रात्रि में १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्माष्टमी जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । हरिभक्त विशाल संख्या में दर्शन का लाभ लिये थे। - अमृतभाई एस. पटेल

विदेश सत्संग समाचार

टोरन्टो केनेडा (I.S.S.O.) मंदिर का प्रथम पाटोत्सव

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से संप्रदाय के प्रसिद्ध यात्रा धाम जेतलपुर से पधारे हुये स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा स्वा. सत्यस्वरुपदासजी के सहयोग से एवं मार्गदर्शन से आई.एस.एस.ओ., टोरन्टो, केनेडा मंदिर का प्रथम पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में हरिभक्तों के हर्षोल्लास के साथ ता. ७, ८, ९ अगस्त-०९ तीन दिन तक मनाया गया था । ता. ७-८-०९ को प्रातः ९ बजे

पोथीयात्रा प्रारंभ की गयी थी । सत्संगी भाई-बहन भजन-कीर्तन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन करते हुये मंदिर तक आये । ९-३० बजे पोथी व्यासासन पर प्रतिष्ठित की गयी । देव, शास्त्र तथा पारायण के वक्ता इन तीनो को पूजन मुख्य यजमान द्वारा किया गया था । सत्संगिजीवन का त्रिदिनात्मक पारायण विद्वान शा.स्वामी के सुमधुर कंठ से कीर्तन के साथ संपन्न हुआ।

ता. ८-८-०९ शनिवार को प्रात: ९-३० से ११-३० तक महापूजा का आयोजन किया था । महापूजा की पूर्णाहुति की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुई । मंदिर के बाहर पीछे वाले भाग में ८० x ४० फुट का टेन्ट बाधा गया था । जिस में रात्रि के समय बालक-बालिकाओं द्वारा एकांकी नाटक-रास इत्यादि का आयोजन किया गया था । युवान सत्संगियों द्वारा श्री स्वामिनारायण भगवान तथा लालजी सुथार (स.गु. निष्कुलानंद स्वामी) पर आधारित कच्छ प्रवास का एक नाटक मंच पर खेला गया था । पू. महाराजश्री इस कार्यक्रम में उपस्थित थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री नये-नये सत्संगियो के यहाँ पदार्पण किये और उनके मनोरथ पूर्ण किये । पदार्पण टोरन्टो, ब्रेम्पटन, केम्ब्रीज वोटरलु इत्यादि विस्तारो में किये ।

ता. ९-८-०९ रविवार को मंदिर के पाटोत्सव के मंगल अवसर पर श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक प्रात: ७-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री के कर कमलों द्वारा हुआ । बाद में टेन्ट हाउस में विशाल सभा का आयोजन किया गया । उसमें पूर्णाहुति, आचार्य महाराजश्री का पूजन इत्यादि किया गया था । पाटोत्सव के सभी यजमान पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे। अमेरिका से पधारे हुये सभी मेहमानो का संमान किया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वचन में सभी सत्संगी को गुण ग्रहण करने के लिये तथा अवगुण त्यागने के लिये कहा था । गुण ग्रहण करने से सत्संगी में भगवान का वास होता है । अवगुण ग्रहण करने से भगवान दूर चले जाते हैं । भगवान को जो आगे रखेगा, भगवान में जो दृढता रखेगा, प्रतिदिन जो दर्शन करेगा उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होगी वह सुखी होगा ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

सभी सत्संगी बहनो द्वारा निर्मित विविधव्यंजनो को प्रभु के सामने नैवेद्य में रखा गया था । आचार्य महाराजश्रीने ११-३० बजे अन्नकूट की आरती उतारकर पाटोत्सव की पूर्णाहुति की थी । श्री जगदीशभाई शुक्ल उमरेठवाला ने विविधप्रसंगो को शास्त्रोक्त विधिसे समझाया था । ठाकुरजी की पूजा, पोथी पूजा, वक्ताजी की पूजा, महापूजा, अभिषेक, महाराजश्री का पूजन किया गया था ।

पाटोत्सव में विविधसेवा करने वाले यजमानों को मूर्ति प्रतिष्ठा की डी.वी.डी. भेंट में दी गयी थी ।

समग्र उत्सव दरम्यान दोनो समय भोजनादिक व्यवस्था की गयी थी । महाप्रसाद बनाने की व्यवस्था सत्संगी बहनों ने किया था । स्वयं सेवक सत्संगी भाई-बहनों की सेवा सराहनीय थी ।

पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा उदयनभाई राजाने देव, आचार्य तथा संत की सेवा का बीज वपन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के स्वयं सेवक भाई-बहनों में जो प्रतिष्ठा के समय किया गया था वह फल आज दिखाई दे रहा है ।

यहाँ के प्रेसीडेन्ट श्री दशरथभाई चौधरीने संस्थाकीय परिचय दिया था । प्रतिष्ठोत्सव के समय सेवा करने वाले सभी का आभार मानकर आगे भी इसी तरह सहयोग करने के लिये सभी नम्र निवेदन किये थे । समग्र पाटोत्सव के समय श्री नटुभाई पटेल ने सफल संचालन करके महाराज की तथा महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी । सभी छोटे-बड़ो की सेवा प्रेरणारुप थी । - भाईलालभाई पटेल

चेरीहिल श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरीहिल में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा १५ वीं अगस्त को स्वतंत्रादिन को भव्य ढंग से मनाया गया था. स्थानिक हरिभक्त तथा कोलोनिया, न्युयोर्क, पारसी, पेनी इत्यादि स्थलों से सैकडो हरिभक्त उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को धूमधाम से मनाये थे ।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद से पू. शा. निर्गुणदासजी तथा धोलका के महंत नारायणमुनि स्वामी विहोकन मंदिरके माधव स्वामी, चेरीहिल मंदिर के विश्वप्रकाशदासजी इत्यादि संत पधारे थे, जिनका पुष्पहार से समान किया था । १०० जितने हरिभक्त उपस्थित होकर मंदिर के हाल में भारत के राष्ट्रगीत को गाकर राष्ट्रध्वज को लहराये थे ।

ठाकुरजी को पालना में झुलाकर दर्शन का सुख प्राप्त किये थे । छोटे-छोटे बालक सुन्दर नृत्य प्रदर्शन किये थे । स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने कृष्ण जन्माष्टमी तथा पन्द्रह अगस्त का रहस्य समझाया था । पू. निर्गुणस्वामीने सर्वोपरि भगवान का माहात्म्य सरल भाषा में समझाया था । माधव स्वामीने सेवा के विषय में बताया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । - पी. शाह

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण मास में सुन्दर

झूले को सजाकर उस पर ठाकुरजी को झुलाया गया था। जन्माष्टमी के दिन अहमदाबाद से पधारे हुये शा. स्वा. निर्गुणदासजी, मुनि स्वा. कोलोनिया से ज्ञानजीवन स्वामी इत्यादि संतोने जन्माष्टमी का माहात्म्य समझाया था। शा. स्वा. निर्गुणदासजीने श्रीमद् भगवत् गीता के ११ स्कन्धकी कथा का सभी को लाभ दिया था। अनेकों दृष्टांतो द्वारा कथा रस पान करके भक्तजन तृप्त हो गये थे। बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित थे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

४ था पाटोत्सव धूमधाम से संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आँज्ञा से तथा संतो की प्रेरणा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर का ४ था पाटोत्सव ४-९-०९ के दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजी, प.पू. बिन्दु राजा, चि. श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार तथा अहर्निश सेवा में रहने वाले वनराज भगत की उपस्थिति में धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। पुजारी स्वामीने शास्त्रोक्त विधिसे महाभिषेक आदि कार्य करवाया। आई.एस.एस.ओ. के प्रत्येक चेप्टर से संत-हरिभक्त इस प्रसंग पर उपस्थित थे। प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के सानिध्य में १ दिन का सत्संग शिबिर रखा गया था। बड़ी संख्या में बहनो ने भाग लेकर जीवन की धन्यता का अनुभव किया था। प.पू. बड़ी गादीवालाजीने पाटोत्सव के यजमान बहनों को पुष्प भेंट प्रसाद के रुप में देकर आशीर्वाद दिया था। यजमान परिवार की बहनोने भी पूज्या गादीवाला का तथा बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी थी। शा.स्वा. निर्गुणदासजी के कथा पारायण में पूरे सात दिन तक पूज्या गादीवालजी उपस्थित होकर बहनों को आशीर्वाद का सुख प्रदान की थी। प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार का संमान किया गया था।

चेरीहिल मंदिर के शा. विश्वप्रकाशदासजी, कोटेश्वर गुरुकुल के शा. रामकृष्णदासजी, विहोकन मंदिर के माधवप्रसाददासजी, धोलका के मुनि स्वामी तथा अन्य महानुभावो ने भगवान का माहात्म्य समझाया था। बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर कथा एवं दर्शन का लाभ लिये थे। धर्मवंशी की कृपा से सत्संग में खूब वृद्धि हो रही है।- पी. शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालजी, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के स्ट्रेधाम मंदिर का १४ वे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ८-८-०९ से ता. १६-८-०९ तक श्रीमद् भागवत कथा पू. योगेन्द्र भट्टने की थी।

इस प्रसंग पर बहनों के आग्रह पर अहमदाबाद से प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवं श्रीराजा पधारी थी।

प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से श्रीहरि कृष्ण महाराज का महाभिषेक किया गया था। इसी दिन मंदिर पर ध्वजारोहण किया गया था।

प्रासंगिक सभा में जयकृष्ण स्वामी, विश्ववल्लभदासजी स्वा. व्रजवल्लभदासजी उपस्थित थे। विश्व वल्लभदासजी ने सर्वोपरि श्रीहरिका तथा धर्मकुल का सर्वोत्तम माहात्म्य समझाया था।

यजमान परिवार के भूपेन्द्रभाई पंड्या, दीप्तिबहन भूपेन्द्रभाई धोलीन तथा कृष्णा इत्यादिने पूज्या गीदावालाजी का पूजन-अर्चन करके आरती की थी। श्री भूपेन्द्रभाई तथा धोलीन ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। अंत में समस्त सभा को आशीर्वाद दिया था। प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया गया था। प्रत्येक हरिभक्त को प्रसाद का लाभ मिला था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है। - जयेश वाघेला

ह्युस्टन (यु.एस.ए.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं।

१६ अगस्त के रविवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई थी। हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर श्रीकृष्ण प्रागट्योत्सव के पारणा का लाभ लिये थे। २३ अगस्त को श्री गणेश चतुर्थी का उत्सव विशेष रुप से मनाया गया था। जलझीलणी एकादशी को मंदिर में भगवान को नौका विहार कराकर सुन्दर जुलूस निकाला गया था। इसमें बड़ी संख्या में भक्त समुदाय उपस्थित थे।

हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये। प.पू. महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है। - रमेश पटेल सेक्रेटरी

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री

(अनुसंधान १० पाने)

Editor, Printer and Publisher : Mahant Shastri Swami Harikrishnadasji for Shree Swaminarayan Temple Kalupur, Ahmedabad. Printed at Shree Swaminarayan Printing press, Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmedabad (GUJARAT) Pin-380 001 and Published at and for Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmedabad (GUJARAT) Pin-380 001.



(1) कांकरिया मंदिर द्वारा आयोजित हरिकृष्ण सोसायटी में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में कथामृत पान कराते हुये शा. यज्ञप्रकाशदासजी (2) वहेलाल मंदिर में संत निवास तथा प्रवेश द्वार का उद्घाटन करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री (3-4) अहमदाबाद हेरीटेज फाउन्डेशन द्वारा आयोजित एक शो प्रसंग में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पधारे हुये शहर के नामांकित आर्किटेक, इन्जिनियर तथा बिल्टर पू. महंत स्वामी तथा ट्रस्टी श्री रतिभाई साथ में वार्तालाप करते हुये। (5) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में शारदीय पूनम की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री (6) नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में शरद पूनम की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री (7) टोरडा मंदिर में शिबिर प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री का भव्य स्वागत करते हुये भक्तजन (8) जयपुर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर कथा के वक्ता पू. पी.पी. स्वामी तथा व्यासपीठ की आरती उतारते हुये यजमान परिवार।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



सीनेमीन्सन-साउथजर्सी के मंदिर में
प.पू. महाराजश्री का प्रागट्योत्सव संपन्न ।

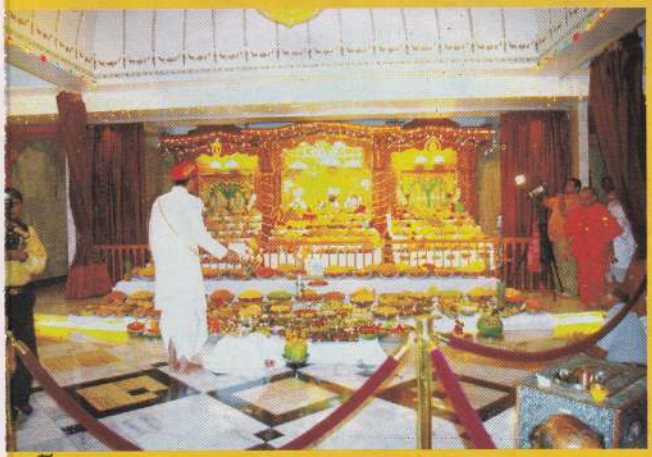


सीनेमीन्सन-साउथजर्सी मंदिर के पाटोत्सव
प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुये संत ।





पर्थ-ओस्ट्रेलीया हाल में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री
साथ में शा. रामकृष्णदासजी तथा विशाल संख्या में लाभ लेते हुये हरिभक्त ।





शिकागो मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुये प.पू. महाराजश्री
तथा कथा रसपान करते हुये शा. रामकृष्णदासजी ।

Jagadish Offset

Praful Kharsani